



प्रशासनिक प्रतिवेदन वर्ष 2016-17



पशुपालन विभाग

मध्यप्रदेश शासन



ग्राम सनावद (जिला खरगौन) में दिनांक 31 अक्टूबर 2016 को गोकुल महोत्सव के शुभारंभ अवसर पर माननीय श्री अंतर सिंह आर्य जी मंत्री, मध्य प्रदेश शासन, पशुपालन विभाग उद्बोधन देते हुए



ग्राम सनावद (जिला खरगौन) में दिनांक 31 अक्टूबर 2016 को गोकुल महोत्सव के शुभारंभ अवसर पर कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि एवं पशुपालक

मंत्रालय

पद नाम	नाम	दूरभाष	
		कार्यालय	निवास
मंत्री	माननीय श्री अंतर सिंह आर्य	2551953	2441593 2441060
अपर मुख्य सचिव एवं कृषि उत्पादन आयुक्त	श्री पी. सी. मीणा	2441348	2420340
प्रमुख सचिव	श्री अश्विनी कुमार राय	2550168	-
उप सचिव	श्री प्रकाश जांगरे	2573904	-
अवर सचिव	श्रीमती कलिस्ता कुजुर	2512023	-

विभागाध्यक्ष

पद नाम	नाम	दूरभाष	
		कार्यालय	निवास
संचालक पशुपालन	डा० आर०के० रोकड़े	2772262	2765340
प्रबन्ध संचालक मध्यप्रदेश स्टेट को-आपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड	श्रीमती अरुणा गुप्ता	2602145	-
प्रबन्ध संचालक मध्यप्रदेश राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम	डा०एच.बी.एस. भदौरिया	2776086	2980223
प्रबन्ध संचालक मध्यप्रदेश गौपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड	डा० आर०के० रोकड़े	2776310	2765340

विषय सूची

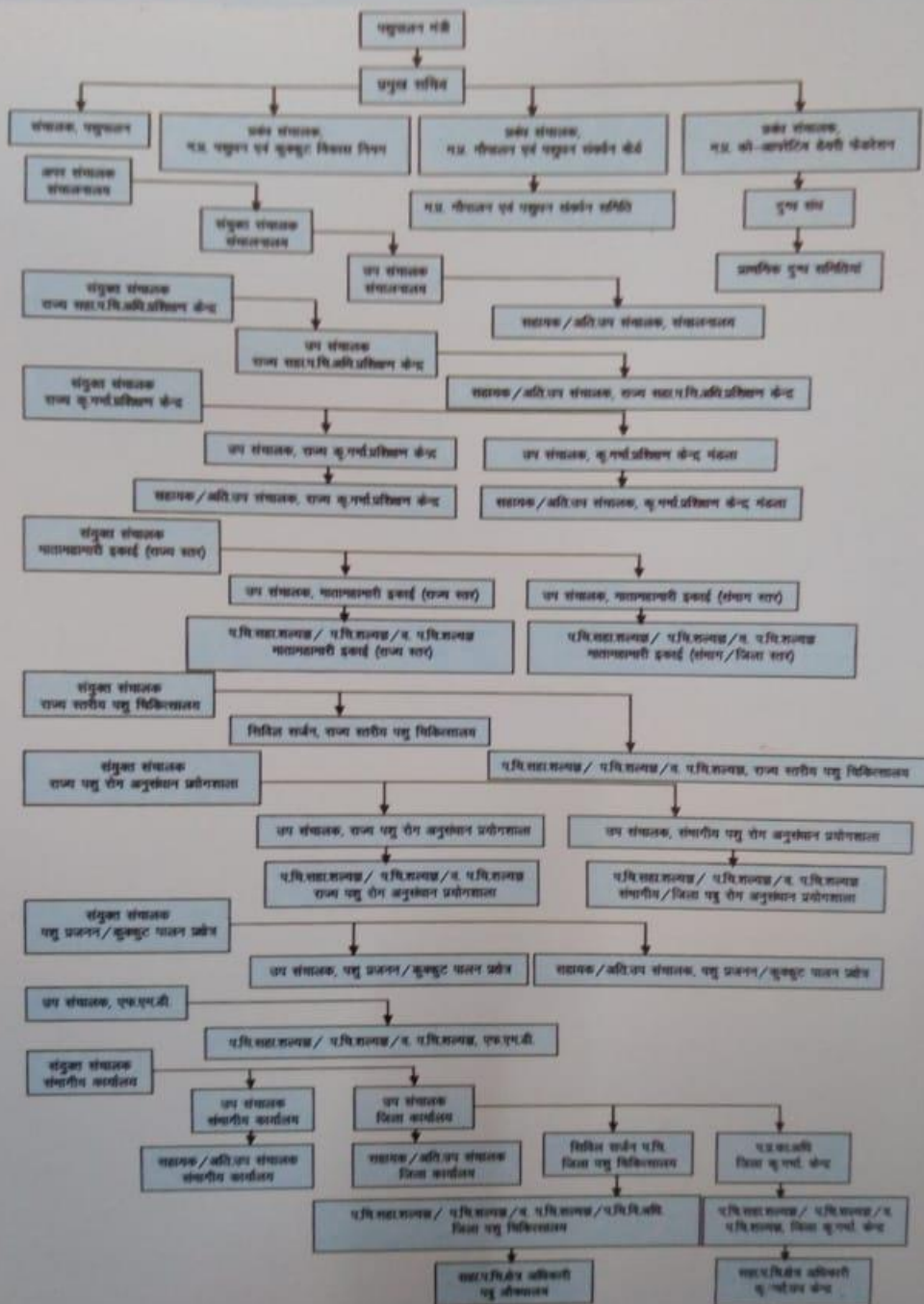
भाग	विषय	पृष्ठ
एक	1.1 विभागीय संरचना	1
	1.2 अधीनस्थ कार्यालय	2
	1.3 विभाग के अन्तर्गत आने वाले उपक्रम/ निगम मण्डलों का विवरण	2
	1.4 विभाग का उद्देश्य	3
	1.5 विभाग से संबंधित सामान्य जानकारी	3
	1.6 तकनीकी कार्य	3
	1.7 पशु स्वास्थ्य रक्षा एवं संवर्धन	4-5
	1.8 मध्य प्रदेश पशुधन विकास नीति	5
	1.9 नस्ल सुधार	5-10
	1.10 महत्वपूर्ण सांख्यिकी	10-12
दो	बजट विहंगावलोकन एवं बजट प्रावधान एवं व्यय	13
तीन	राज्य योजनाएं तथा केन्द्र प्रवर्तित योजनाएं	14
	3.1 हितग्राही मूलक योजनाएं	14-19
	3.2 पशु चिकित्सा सेवाओं का विस्तार	20
	3.3 भ्रूण प्रत्यारोपण प्रयोगशाला की स्थापना	20
	3.4 पशु आश्रय स्थल आसरा	21
	3.5 पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय	21
	3.6 ई-वेट परियोजना	21
	3.7 केन्द्र प्रवर्तित योजनाएं	23-33
चार	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र/भेड़ प्रक्षेत्र/बकरी प्रक्षेत्र/कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र	34
	4.1 शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र का उद्देश्य	34
	4.2 शासकीय भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र का उद्देश्य	35
	4.3 शासकीय बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र का उद्देश्य	35
	4.4 शासकीय कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र का उद्देश्य	36
पांच	सामान्य प्रशासनिक जानकारी	37-39
छः	विभागीय उपलब्धियां	40
	6.1 महत्वपूर्ण विभागीय उपलब्धियां	40
	6.2 गोकुल महोत्सव	41-42

सात	विभाग के अन्तर्गत आने वाले निगम, बोर्ड एवं समितियां	43
	7.1 म.प्र.राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम	43-44
	7.2 एम.पी. स्टेट कोआपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड	45-47
	7.3 म.प्र.गौपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड	47-49
	7.4 पशु रोगी कल्याण समिति	50
	7.5 पशु कूरता निवारण समिति	50
	7.6 मध्य प्रदेश पशु चिकित्सा परिषद्	50
आठ	परिशिष्ट एक -जिलेवार 19वीं पशु संगणना 2012 के आंकड़े	51-52
	परिशिष्ट दो - 19वीं पशु संगणना में मध्यप्रदेश की हिस्सेदारी	53
	परिशिष्ट तीन- देश के अन्य राज्यों की तुलना में प्रदेश के पशु उत्पादों की जानकारी (वर्ष 2015-16)	54
	परिशिष्ट चार -जिलेवार अनुमानित दूध,अण्डा,मांस की जानकारी (वर्ष 2015-16)	55-56
	परिशिष्ट पांच- 19वीं पशु संगणना 2012 अनुसार प्रजनन योग्य गौ-भैंस (मादा पशु) की जानकारी	57-58
	परिशिष्ट छः - 19वीं पशु संगणना 2012 अनुसार म.प्र. में पशु चिकित्सा संस्थाओं पर पशुधन स्थिति (दिसम्बर 2016 की स्थिति में)	59-60

भाग - एक

भाग - एक

1.1 विभागीय संरचना



1.2 अधीनस्थ कार्यालय

- (i) संचालनालय पशुपालन,
- (ii) पशु स्वास्थ्य एवं जैविक उत्पाद संस्थान महु जिला इन्दौर,
- (iii) संयुक्त संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं, समस्त संभाग,
- (iv) उप संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं समस्त जिले,
- (v) राज्य पशु रोग अन्वेषण प्रयोगशाला, भोपाल,
- (vi) माता महामारी उन्मूलन कार्यक्रम म0प्र0, भोपाल,
- (vii) मुँहखुरी रोग व्यापकी इकाई, भोपाल,.
- (viii) कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण केन्द्र भोपाल/मंडला,
- (ix) सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी प्रशिक्षण संस्थान शिवपुरी,
- (x) राज्य पशु चिकित्सालय भोपाल,
- (xi) जर्सी पशु प्रजनन प्रक्षेत्र भदभदा (भोपाल)
- (xii) पशु प्रजनन प्रक्षेत्र मिनौरा (टीकमगढ़) आगर (मालवा) रोड़िया (खरगौन), रतौना (सागर), इमलीखेड़ा (छिंदवाड़ा), गढ़ी (बालाघाट), पवई (पन्ना),
- (xiii) बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र आरोन (ग्वालियर), मिनौरा (टीकमगढ़),
- (xiv) भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र पड़ोरा (शिवपुरी), मिनौरा (टीकमगढ़), बांसाखेड़ी (मंदसौर)
- (xv) कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र एवं अनुसंधान केन्द्र भोपाल,
- (xvi) कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र, इन्दौर/ग्वालियर/रीवा/शहडोल/छिंदवाड़ा/झाबुआ/गुना/सागर,
- (xvii) कुक्कुट प्रशिक्षण विद्यालय, रीवा

1.3 विभाग के अन्तर्गत आने वाले उपक्रम/ निगम/मंडलों/ परिषद्/ संस्थानों का विवरण

- 1.3.1 मध्यप्रदेश गौपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड,
- 1.3.2 मध्यप्रदेश स्टेट को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड
- 1.3.3 मध्यप्रदेश राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम,
- 1.3.4 म0प्र0पशु चिकित्सा परिषद,
- 1.3.5 नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर

1.4 विभाग का उद्देश्य

पशुपालन विभाग का उद्देश्य पशु स्वास्थ्य रक्षा तथा पशु संवर्धन एवं संरक्षण के माध्यम से पशुधन एवं कुक्कुट उत्पाद में वृद्धि करना तथा कमजोर वर्ग के हितग्राहियों को पशुपालन के माध्यम से आर्थिक लाभ पहुँचाना है।

1.5 विभाग से संबंधित सामान्य जानकारी

1 नवम्बर, 1956 को मध्यप्रदेश के गठन उपरान्त 20 मई, 1962 को कृषि विभाग के अन्तर्गत ही पृथक से संचालनालय, पशु चिकित्सा सेवाएं स्थापित किया गया। वर्ष 1981में पशुपालन विभाग को कृषि विभाग से पृथक करते हुए स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में लाया गया। 4 फरवरी 2011से संचालनालय पशु चिकित्सा सेवाएं का नाम परिवर्तन कर संचालनालय, पशुपालन किया गया है।

1.5.1 प्रदेश का कुल क्षेत्रफल (हजार वर्ग किलोमीटर में)	308
1.5.2 प्रदेश की कुल जनसंख्या (लाख में जनगणना 2011)	726
1.5.3 प्रदेश में कुल पशुधन संख्या (लाख में पशु संगणना 2012)	363
1.5.4 प्रदेश की कुल गौवंशीय पशु (लाख में पशु संगणना 2012)	196
1.5.5 प्रदेश की कुल भैंसवंशीय पशु (लाख में पशु संगणना 2012)	82
1.5.6 प्रदेश की कुल भेड़ा-भेड़ी पशु (लाख में पशु संगणना 2012)	3
1.5.7 प्रदेश की कुल बकरा-बकरी पशु (लाख में पशु संगणना 2012)	80
1.5.8 प्रदेश की कुल कुक्कुट (लाख में पशु संगणना 2012)	119

1.6 तकनीकी कार्य

- 1.6.1 पशु चिकित्सा सेवाएं अन्तर्गत पशु रोगों की रोकथाम तथा उसका उपचार,
- 1.6.2 पशु रोग अन्वेषण,
- 1.6.3 टीकाकरण,
- 1.6.4 बधियाकरण,
- 1.6.5 पशुपालन अन्तर्गत समग्र पशुधन का संरक्षण/ संवर्धन एवं विकास,
- 1.6.6 समुन्नत प्रजनन,
- 1.6.7 पशुपालन विस्तार सेवा,
- 1.6.8 पशुधन विकास कार्यों का पर्यवेक्षण,
- 1.6.9 कुक्कुट पालन, प्रजनन, संवर्धन,
- 1.6.10 दुग्ध, दुग्ध उत्पादों, अण्डों, मांस की जांच गुणवत्ता नियंत्रण,
- 1.6.11 डेयरी गतिविधियों का सर्वेक्षण, विस्तार, विकास साँख्यिकी,
- 1.6.12 सेवाओं से संबद्ध सभी विषय जिसका विभाग से संबंध हो,

1.7 पशु स्वास्थ्य रक्षा एवं संवर्धन

- 1.7.1 पशु स्वास्थ्य रक्षा हेतु विभाग द्वारा राज्य स्तरीय पशु चिकित्सालय, संभागीय पॉलीक्लिनिक, जिला/ विकासखण्ड/ ग्राम स्तरीय पशु चिकित्सालय, पशु औषधालय, चल चिकित्सा इकाई, चल विरुजालय, स्टेट पेटर्न कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र, स्टेट पेटर्न कृत्रिम गर्भाधान उपकेन्द्र, मुख्य ग्राम खण्ड योजना, मुख्य ग्राम खण्ड इकाई, रोग अनुसंधान प्रयोगशालाएं एवं टीकाद्रव्य उत्पादन हेतु पशु स्वास्थ्य एवं जैविक उत्पादन संस्थान महुँ जिला इन्दौर में संचालित है।
- पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा पशु उपचार, औषधि वितरण, टीकाकरण, नमूनों की जांच आदि से की जाती है। पशुओं का उपचार न केवल पशु चिकित्सालयों व पशु औषधालयों में किया जाता है बल्कि चल पशु चिकित्सा इकाई/ विरुजालय व पशु चिकित्सा शिविरों का आयोजन करके भी किया जाता है।
- 1.7.2 संक्रामक रोगों की रोकथाम हेतु समसामयिक टीकाकरण किया जाता है। टीकाकरण हेतु जिला स्तर पर निम्नानुसार विन्दुओं पर ब्लू प्रिंट तैयार किए जाते हैं:-
- 1.7.2.1 ऐसे ग्रामों की 5 किलोमीटर की परिधि में आने वाले ग्रामों के समस्त पशु जहाँ गत् तीन वर्षों में किसी संक्रामक रोग का उद्भेद हुआ हो।
- 1.7.2.2 ग्वारियों में जाने वाले पशु।
- 1.7.2.3 प्रदेश के बाहर आवागमन मार्गों से आने-जाने वाले पशु।
- 1.7.2.4 पशु बाजार में बाहर से आने वाले पशु।
- 1.7.2.5 वन क्षेत्र की सीमा में आने वाले ग्रामों के पशु।
- 1.7.3 संक्रामक रोगों में मुंहपका खुरपका रोग(एफ.एम.डी), एकटंगिया अथवा चुरकारोग (बी.क्यू), गलघोटू अथवा घटसर्प रोग (एच.एस.) छड़ (एंथ्रेक्स), पी.पी.आर. स्वाईन फीवर, एंट्रोटेक्समिया, रैबीज, रानीखेत (कुक्कुट), फाउलपॉक्स (कुक्कुट), स्पाईरोकीटोसिस (कुक्कुट), मैरेक्स (कुक्कुट), गंबोरो (कुक्कुट) का टीकाकरण किया जाता है।
- 1.7.4 प्रदेश में पशु संसर्गजन्य रोगों (contagious) के रोकथाम हेतु पशु स्वास्थ्य एवं जैविकउत्पादन संस्थान महुँ जिला इन्दौर में चार प्रकार के जीवाणु टीकों, दो प्रकार के टिशू कल्चर (विषाणु) टीकों सहित कुल 12 प्रकार के टीके तथा तीन प्रकार के टीका घोलकों का उत्पादन किया जाता है। मुंहपका खुरपका व पी.पी.आर. रोग को छोड़कर समस्त संक्रामक रोगों के टीकाद्रव्य का उत्पादन इस संस्थान में किया जाता है।
- 1.7.5 यह संस्थान प्रदेश में टीकाद्रव्य की आवश्यकता की पूर्ति करता है साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य को भी आवश्यकतानुसार टीकाद्रव्य प्रदाय किया जाता है एवं विशेष परिस्थितियों में देश के अन्य राज्यों को भी टीकाद्रव्य उपलब्ध कराया जाता है।

1.8 मध्यप्रदेश पशुधन विकास नीति

प्रदेश की कृषि क्षेत्रक गतिविधियों के विकास एवं गरीबी उन्मूलन में पशुपालन के महत्व के दृष्टिगत पशुपालन विभाग द्वारा मध्यप्रदेश पशुधन विकास नीति 2011 तैयार की गई है। पशुधन विकास नीति की मुख्य विशेषताएं निम्नानुसार हैं ।

- 1.8.1 विभिन्न पशुधन विकास एवं उत्पादकता वृद्धि कार्यक्रमों के लिए एक समान रणनीति न अपनाते हुए कृषि जलवायु तथा आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों पर आधारित कार्यक्रम बनाए जाने पर विशेष ध्यान दिया गया है।
- 1.8.2 लघु एवं संसाधन विहीन पशुपालकों को पशुधन उत्पादन वृद्धि में होने वाली कठिनाईयों को दूर करने के उद्देश्य से कम लागत मूल्य पर अधिकाधिक संसाधन उपलब्ध कराए जाने के प्रयास किए गए हैं ।
- 1.8.3 पशुधन विकास कार्यक्रमों का वातावरण में प्रभाव, समान अवसर, महिलाओं को सीधा लाभ तथा स्थिरता जैसे मुद्दों को भी नीति में समाहित किया गया है।
- 1.8.4 पशुधन क्षेत्र की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संस्थागत संरचना एवं प्रक्रियाओं पर विशेष ध्यान देते हुए विभागीय अमले की दक्षता उन्नयन संबंधित विषयों को भी शामिल किया गया है ।
- 1.8.5 पशुधन विकास नीति में सार्वजनिक/निजी/किसान/गैर सरकारी संस्थाओं की साझेदारी को प्रोत्साहन दिए जाने पर बल दिया गया है।
- 1.8.6 पशुधन उत्पादन एवं उत्पादकता वृद्धि कार्यक्रमों के विस्तार एवं क्रियान्वयन हेतु गैर सरकारी संस्थाओं, स्वयंसेवी संस्थाओं एवं लोक निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करने की ओर विशेष ध्यान दिया गया है ।
- 1.8.7 विभिन्न कार्यक्रमों के अग्रगामी एवं पश्चगामी जुड़ावों का ध्यान भी नीति में रखा गया है ताकि पशुधन उत्पादों के संकलन, प्रसंस्करण एवं उनका लाभात्मक विपणन सुनिश्चित किया जा सके।
- 1.8.8 पशुधन विकास नीति गतिमान स्वरूप की होने के फलस्वरूप समय-समय पर पशुपालन के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन के अनुरूप शिथिलता समाहित किए हुए है ।

1.9 नस्ल सुधार

प्रदेश में उपलब्ध पशुओं में मुख्यतः अवर्णित नस्ल के पशु अधिक संख्या में पाए जाते हैं। इन पशुओं की उत्पादक क्षमता बहुत कम है इनकी उत्पादक क्षमता में वृद्धि के लिए प्रदेश में नस्ल सुधार कार्यक्रम संचालित हैं। इस कार्यक्रम के तहत कृत्रिम गर्भाधान एवं प्राकृतिक गर्भाधान द्वारा नस्ल सुधार किया जाता है। प्राकृतिक गर्भाधान में उच्च कोटि के सांडों से मादा पशुओं में प्राकृतिक गर्भाधान कराकर नस्ल सुधार किया जा रहा है। इसी प्रकार कृत्रिम गर्भाधान में उन्नत नस्ल के सांडों के वीर्य से कृत्रिम विधि द्वारा मादा पशुओं में गर्भाधान कराकर नस्ल सुधार किया जा रहा है। प्रदेश में 19वीं पशु संगणना 2012 के अनुसार उपलब्ध 109.05 लाख प्रजनन

योग्य मादा पशुओं में से लगभग 66.10 लाख मादा पशुओं को विभाग की संस्थाओं द्वारा कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से प्रजनन सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इसी प्रकार प्रदेश में विभिन्न योजनाओं में प्रदाय उन्नत नस्ल के लगभग 16713 सांडों/पाइयों द्वारा नैसर्गिक गर्भाधान सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

1.9.1 प्रदेश के देशी वर्णित पशुधन

- 1.9.1.1 मालवा क्षेत्र के शाजापुर, देवास, इन्दौर, उज्जैन व राजगढ़ जिलों में मालवी नस्ल के गौवंशीय पशु अपनी भारवाहक क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं।
- 1.9.1.2 इसी प्रकार निमाड़ क्षेत्र के खरगौन, बड़वानी जिलों में निमाड़ी नस्ल के गौवंशीय पशु अपनी भारवाहक क्षमता के लिए पहचाने जाते हैं।
- 1.9.1.3 टीकमगढ़ व पन्ना क्षेत्र में केनकथा नस्ल के गौवंशीय पशु अपनी भारवाहक क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं।
- 1.9.1.4 भैंस वंश में भदावरी उत्तरी मध्यप्रदेश के भिण्ड जिले में पाई जाती है जो कि दुग्ध उत्पादन हेतु तुलनात्मक दृष्टि से अच्छी है।
- 1.9.1.5 मध्यप्रदेश के झाबुआ तथा धार जिले में प्रदेश की महत्वपूर्ण ख्याति प्राप्त कुक्कुट नस्ल कड़कनाथ पाई जाती है। इसके संरक्षण तथा संवर्धन हेतु विभाग में कड़कनाथ प्रक्षेत्र झाबुआ में संचालित है।

1.9.2 पशु प्रजनन नीति

1.9.2.1 गौवंशीय पशु प्रजनन नीति

प्रदेश के गौ-वंशीय पशुओं के प्रजनन के लिए निम्नलिखित मापदण्ड निर्धारित किए गए हैं:-

- (i) स्थानीय गौ-नस्ल के संरक्षण हेतु नस्ल के ब्रीडिंग ट्रेक्ट्स के शाजापुर, उज्जैन, राजगढ़ जिले में मालवी नस्ल से, निमाड़ क्षेत्र के खरगौन, बड़वानी जिलों में निमाड़ी नस्ल से एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्र के जिला पन्ना व छतरपुर जिले की लौड़ी तहसील में केनकथा नस्ल से चयनित प्रजनन।
- (ii) ग्रामीण क्षेत्र में क्षेत्र विशेष अनुसार स्थानीय अवर्णित नस्लों का देशी वर्णित नस्ल से उन्नयन। मुख्यतः हरियाणा, साहीवाल, थारपारकर व गिर नस्ल से।
- (iii) शहरी, अर्द्धशहरी, मिल्कशेड व औद्योगिक क्षेत्र में जर्सी व हॉलस्टिन फ्रीजियन से संकर प्रजनन। सामान्यतः विदेशी रक्त (Exotic Blood Level) का स्तर 50 प्रतिशत तक एवं प्रगतिशील पशुपालकों की इच्छानुसार विदेशी रक्त का स्तर 62.5 प्रतिशत तक।

उपरोक्त मापदण्ड अनुसार प्रजनन नीति के क्रियान्वयन हेतु प्रदेश को निम्नलिखित सात जोन में विभाजित किया गया है--

(i) जोन I उत्तरीय नदी घाटी

इस जोन के अन्तर्गत भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर तथा दतिया का अल्प भाग आता है एवं इस जोन में हरियाणा नस्ल की तरह व श्रेणीकृत द्विउद्देशीय गौवंशीय पशु पाए जाते हैं। साधारणतः ये पशु आंशिक स्टाल फीडिंग प्रणाली में पाले जाते हैं। इस क्षेत्र की कृषि जलवायु स्थिति हरियाणा नस्ल के होम ट्रेक्ट से मिलती जुलती है, अतः इस जोन के ग्रामीण क्षेत्रों में हरियाणा नस्ल से उन्नयन किया जाएगा। पशुपालकों की मांग पर शहरी एवं अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में विदेशी नस्ल से संकर प्रजनन भी किया जा सकता है।

(ii) जोन II लैट्रैटिक बेल्ट आफ शिवपुरी

इस जोन के अन्तर्गत शिवपुरी जिला एवं गुना का उत्तरी हिस्सा आता है एवं इस क्षेत्र के गौवंशीय पशु सामान्यतः गहरे लाल रंग के औसत कद काठी के हैं जो कृषि कार्य के लिए उपयुक्त हैं किन्तु इनका दुग्ध उत्पादन कम है। अतः इस जोन के ग्रामीण क्षेत्रों में देशी वर्णित नस्ल जैसे हरियाणा, थारपारकर से उन्नयन किया जाएगा। चूँकि शिवपुरी जिला मिल्क शेड में आता है, इसलिए शहरी एवं अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में जर्सी नस्ल से संकर प्रजनन अनुशंसित है।

(iii) जोन III मालवा का पठार

इस जोन के अन्तर्गत राजगढ़, शाजापुर, उज्जैन, रतलाम, इंदौर, देवास, गुना, विदिशा, रायसेन, सीहोर, धार, उत्तरी झाबुआ, मंदसौर एवं नीमच जिले आते हैं एवं इस क्षेत्र में मुख्य रूप से द्विउद्देशीय गाय की मालवी नस्ल पाई जाती है। इस जोन के अन्तर्गत उज्जैन जिले की महिदपुर तहसील, राजगढ़ जिले की खिलचीपुर, जीरापुर तहसील एवं आगर व शाजापुर जिले की आगर एवं शाजापुर तहसील में मालवी नस्ल से चयनित प्रजनन किया जाएगा एवं शेष ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालकों की मांग अनुसार मालवी एवं थारपारकर अथवा गिर नस्ल से उन्नयन तथा शहरी एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्रों के मिल्क शेड क्षेत्र में विदेशी नस्ल जर्सी, एच. एफ. से संकर प्रजनन किया जाना लक्षित है।

(iv) जोन IV निमाड़ी ट्रेक्ट

इस जोन के अन्तर्गत अलीराजपुर जिले की अलीराजपुर तहसील, धार जिले की कुक्षी व मनावर तहसील, जिला खरगोन, बड़वानी, खण्डवा, बुरहानपुर, हरदा जिले की हरदा तहसील तथा बैतूल जिले की भैंसदेही तहसील आती है। इस जोन में गाय की निमाड़ी नस्ल के पशु पाए जाते हैं जो एक भार वाहक नस्ल है। इस जोन के मिल्क शेड क्षेत्र में विदेशी नस्ल-जर्सी से संकर प्रजनन तथा पश्चिम निमाड़-खरगोन व बड़वानी, जिलो में निमाड़ी नस्ल चयनित प्रजनन, पूर्वी निमाड़-खण्डवा, बुरहानपुर, जिले के ग्रामीण क्षेत्र में निमाड़ी नस्ल से चयनित प्रजनन तथा शेष शहरी व मिल्क क्षेत्र में विदेशी नस्ल से संकर प्रजनन किया जाना लक्षित है।

(v) जोन V पश्चिमी विंध्य पठार व नर्मदा घाटी

इस जोन के अन्तर्गत जिला जबलपुर, नरसिंहपुर, सागर, होशंगाबाद, दमोह जिले की दमोह तहसील, छिंदवाडा जिले की अमरवाडा तहसील तथा सिवनी जिला (कुरई विकास खण्ड छोड़कर) आता है एवं इस जोन क्षेत्र में अवर्णित नस्ल के देशी पशु पाए जाते हैं। प्रजनन नीति अनुसार जोन के ग्रामीण क्षेत्र में थारपरकर नस्ल से

उन्नयन तथा मिल्क शेड व शहरी क्षेत्र में विदेशी नस्ल जर्सी, हॉलिस्टिन फ्रिजियन से संकर प्रजनन तथा छत्तीसगढ़ से जुड़े कुछ क्षेत्रों में साहीवाल नस्ल से उन्नयन किया जाना लक्षित है।

(vi) जोन VI पूर्वी विंध्य पठार

इस जोन के अन्तर्गत दमोह जिले की हटा तहसील, जबलपुर की मुडवारा तहसील एवं जिला रीवा, सतना, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़ तथा सीधी जिले का उत्तरी क्षेत्र आते हैं एवं इस जोन की केन घाटी में पन्ना जिले की अजयगढ़ तहसील क्षेत्र केनकथा नस्ल का होम लैण्ड है। यह नस्ल प्रसिद्ध भारवाहक नस्ल है जो पहाड़ी क्षेत्र के लिए उपयुक्त है। केनकथा नस्ल के श्रेणीकृत पशु पन्ना जिले से जुड़े हुए छतरपुर के कुछ भागों में भी पाए जाते हैं। प्रजनन नीति अनुसार केन नदी घाटी के अजयगढ़ तहसील के साथ पन्ना में केनकथा नस्ल से चयनित प्रजनन, जोन के ग्रामीण क्षेत्रों में हरियाणा नस्ल से उन्नयन तथा शहरी क्षेत्र में जर्सी हॉलिस्टिन फ्रीजियन नस्ल से संकर प्रजनन किया जाना लक्षित है।

(vii) जोन VII पूर्वी सतपुडा का पठार

इस जोन के अन्तर्गत जिला बालाघाट एवं सिवनी जिले के लखनादोंन तहसील से पूर्वी क्षेत्र की ओर शहडोल, उमरिया, अनूपपुर जिले तक इस क्षेत्र में देशी अवर्णित नस्ल के पशु पाए जाते हैं। इस जोन के शहरी क्षेत्र में जर्सी हॉलिस्टिन फ्रीजियन से संकर प्रजनन तथा ग्रामीण क्षेत्र में थारपारकर एवं छत्तीसगढ़ राज्य से जुड़े क्षेत्र में साहीवाल नस्ल से उन्नयन किया जाना लक्षित है। इसी प्रकार महाराष्ट्र राज्य के वर्धा, नागपुर जिलों से जुड़े मध्यप्रदेश के छिंदवाडा, सिवनी, बालाघाट व बैतूल जिलों के चयनित पाकेट में गौलव नस्ल से उन्नयन किया जाना अनुशंसित है।

1.9.2.2 भैंस वंशीय पशु प्रजनन नीति

सामान्यतः प्रदेश में अवर्णित नस्ल के भैंस वंशीय पशु तथा ग्रेडेड मुर्दा पशु पाए जाते हैं। मात्र उत्तरी नदी घाटी के जिला भिण्ड में भदावरी व ग्रेडेड भदावरी भैंस वंशीय पशु पाए जाते हैं।

जोन I-

उत्तरी नदीघाटी के जिला भिण्ड एवं जिले से जुड़े ग्वालियर संभाग के जिलों के चयनित क्षेत्र में भदावरी नस्ल से उन्नयन।

जोन II-

मालवा का पठार एवं ब्रीडिंग जोन IV निमाड़ी ट्रेक्ट क्षेत्र के कुछ भाग-दक्षिण पूर्वी गुजरात से जुड़े शहरों के कुछ भाग में जाफरावादी नस्ल से उन्नयन। उपरोक्त के अतिरिक्त शेष रहे सम्पूर्ण प्रदेश में मुर्दा नस्ल से उन्नयन।

1.9.2.3 छोटे पशुओं की प्रजनन नीति

- (i) राज्य के उत्तरी क्षेत्र में बारबरी बकरों की नस्ल से उन्नयन तथा प्रदेश के शेष क्षेत्र में जमनापारी नस्ल से उन्नयन लक्षित है।
- (ii) कॉरीडेल, रेम्बोलेट की संकर भेड़ नस्ल से स्थानीय भेड़ों का उन्नयन लक्षित है।
- (iii) मिडिल व्हाइट यार्कशायर सूकर नस्ल से स्थानीय सूकरों का उन्नयन लक्षित है।

तालिका 1.1
प्रदेश में पशु स्वास्थ्य रक्षा एवं संवर्धन हेतु संचालित संस्थाएं

क्रमांक	संस्था का नाम	संख्या
1	राज्य स्तरीय पशु चिकित्सालय	1
2	पशु चिकित्सालय	1063
3	पशु औषधालय	1585
4	चल पशु चिकित्सा इकाई	38
5	चल विरुजालय	27
6	रोग अन्वेषण प्रयोगशालाएं	32
7	मुंहखुरी रोगव्यापकी इकाई	1
8	पशु स्वास्थ्य एवं जैविक उत्पाद् संस्थान	1
9	सीरम संस्थान	1
10	उप संचालक माता महामारी (राज्य स्तर)	1
11	पशु जांच चौकी	19
12	अनुगामी इकाई	10
13	सतर्कता इकाई	7
14	सघन टीकाकरण इकाई	7
15	रोग शमन दल	2
16	पशु निरोधस्थल (क्वारनटाइन स्टेशन)	1
17	फ़ोजन सीमेन बुल स्टेशन	1
18	फ़ोजन सीमेन बैंक	7
19	मुख्य ग्राम योजना	38
20	मुख्य ग्राम इकाई	380
21	नियंत्रित पशु प्रजनन कार्यक्रम	4
22	नियंत्रित पशु प्रजनन उपकेन्द्र (खिलचीपुर-50, खरगौन-25, अजयगढ़-25, डिण्डोरी-25)	125
23	स्टेट पैटर्न कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र	16
24	स्टेट पैटर्न कृत्रिम रेतन उपकेन्द्र	141
25	गहन पशु विकास परियोजना	17
26	गहन पशु विकास कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र	60
27	गहन पशु विकास कृत्रिम गर्भाधान उपकेन्द्र	904
28	कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण संस्थान	2
29	सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी प्रशिक्षण संस्थान	1
30	नानाजी देखमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय	1
31	पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय	3
32	पशुपालन पत्रोपाधि महाविद्यालय	5

तालिका 1.2
पशु स्वास्थ्य रक्षा की विगत तीन वर्षों की जानकारी (लाख में)

क्र०	विवरण	2014-15	2015-16	2016-17 (माह दिसम्बर तक)
1	पशु उपचार	91.25	112.98	107.63
2	औषधि वितरण	68.83	73.25	113.89
3	टीकाकरण	194.41	240.32	314.99
3	नमूनों की जाँच	4.51	4.51	3.03

तालिका 1.3
पशु संवर्धन व उन्नत प्रजनन हेतु विगत तीन वर्षों की जानकारी (लाख में)

क्र०	विवरण	2014-15	2015-16	2016-17 (माह दिसम्बर तक)
1	कृत्रिम गर्भाधान	23.88	27.25	17.06
2	कृत्रिम गर्भाधान से वत्सोत्पादन	4.79	8.59	6.00
3	प्राकृतिक गर्भाधान	4.15	5.14	3.92
4	प्राकृतिक गर्भाधान से वत्सोत्पादन	2.39	2.89	2.15
5	बधियाकरण	6.93	8.06	8.13

1.10 महत्वपूर्ण सांख्यिकीय

भारत विश्व के उन राष्ट्रों में से एक है जिनकी आर्थिकी पशुधन पर निर्भर है व सर्वाधिक गौ व भैंसवंश वाला राष्ट्र है। एकीकृत नमूना सर्वेक्षण के अनुमानित उत्पादनों के अनुसार वर्ष 2015-16 में देश में प्रदेश का दुग्ध उत्पादन में चौथा, अण्डे उत्पादन में चौदहवां एवं मांस उत्पादन में पन्द्रहवां स्थान है।

तालिका 1.4

19वीं पशु संगणना 2012 एवं 18वीं पशु संगणना 2007 की तुलनात्मक स्थिति

क्रमांक	विवरण	19वीं पशु संगणना 2012	18वीं पशु संगणना 2007	प्रतिशत वृद्धि / कमी
1	गौवंशीय पशु	1,96,02366	2,19,15,438	-10.5
2	भैंस वंशीय पशु	8187989	91,29,152	-10.3
3	भेड़/भेड़ी	3,08,953	3,89,863	-20.8
4	बकरे/बकरियाँ	80,13,936	90,13,687	-11.1
5	घोड़े/घोड़ियाँ	18,803	27,191	-30.8
6	खच्चर	6,989	2,617	+167.1
7	गधे	14,916	20,199	-26.2
8	ऊँट	3,422	4,456	-23.2
9	सूअर	1,75,253	1,92,941	-9.2
	कुल पशुधन	3,63,32,627	4,06,95,544	-10.7
10	कुत्ते	4,33,367	-	
11	खरगोश	3,679	-	
	कुल कुक्कुट	119,04,716	73,84,318	+61.2

”स्रोत: भारत सरकार की 18वीं एवं 19वीं पशु संगणना

तालिका 1.5

मध्यप्रदेश में केन्द्र प्रवर्तित योजना दूध,अण्डा एवं मांस उत्पाद के वर्षवार आँकड़े

क्रं	विवरण	वर्ष				
		2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
1	दुग्धोत्पादन (000मे.टनमें)	8149	8838	9599	10779	12148
2	अण्डा उत्पादन (लाख में)	7972	8712	9671	11776	14414
3	मांस उत्पादन (000मेंटनमें)	39	43	48	59	70

स्रोत:- भारत सरकार की एकीकृत नमूना सर्वेक्षण योजना

तालिका 1.6

मध्यप्रदेश में केन्द्र प्रवर्तित योजना दूध, अण्डा एवं मांस उत्पाद के वर्षवार अनुमानित प्रति व्यक्ति उपलब्धता

वर्ष	प्रति व्यक्ति प्रतिदिन दुग्ध उपलब्धता (ग्राम में)	प्रति व्यक्ति वार्षिक अंडा उपलब्धता (संख्या में)	प्रति व्यक्ति वार्षिक मांस उपलब्धता (ग्राम में)
2011-12	308	11	537
2012-13	327	12	571
2013-14	349	13	623
2014-15	386	15	765
2015-16	428	19	873

1.11 विभाग द्वारा प्रसारित अधिनियम व नियम/ नीति :-

- (i) मध्यप्रदेश पशुधन सुधार अधिनियम, 1950
- (ii) मध्यप्रदेश कृषिक पशु परिरक्षण अधिनियम, 1959 (यथा संशोधित 2006)
- (iii) मध्यप्रदेश पशु (नियंत्रण) अधिनियम, 1976
- (iv) मध्यप्रदेश राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास अधिनियम, 1982 (यथा संशोधित 1984)
- (v) मध्यप्रदेश गौवंश वध प्रतिषेध अधिनियम 2004 (यथा संशोधित 2010) नियम 2012
- (vi) मध्यप्रदेश पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 संशोधन अधिनियम 2012
- (vii) मध्यप्रदेश राज्य पशु चिकित्सा परिषद् नियम 1993
- (viii) मध्यप्रदेश गौपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड नियमावली 2006
- (ix) मध्यप्रदेश पशुधन विकास नीति 2011
- (x) पशुओं में संक्रामक एवं संसर्गजन्य रोगों के नियंत्रण एवं रोकथाम नियम 2015

1.12 भारत सरकार द्वारा प्रसारित नियम व अधिनियम प्रदेश में लागू

1.12.1 पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960

1.12.2 भारतीय पशु चिकित्सा परिषद् अधिनियम, 1984

1.12.3 पशुओं के संक्रामक एवं संसर्गजन्य रोगों के रोकथाम अधिनियम 2009

भाग-दो

बजट विहंगावलोकन एवं बजट प्रावधान व व्यय (योजनावार)

2.1 आयोजनेत्तर बजट एवं व्यय

(राशि ` लाख में)

वर्ष	स्वीकृत प्रावधान		व्यय	
	मांगसंख्या-14	मांगसंख्या-74	मांगसंख्या-14	मांग संख्या-74
2014-15	52433.53	341.25	52385.64	303.03
2015-16	51561.76	356.35	43641.27	291.52
2016-17	53287.53	356.35	36453.20 (माह दिस0 तक)	77.06 (माह दिस0 तक)

2.2 आयोजना बजट एवं व्यय

(राशि ` लाख में)

वर्ष	सामान्य योजना 14+74		आदिवासी उपयोजना 41+52		विशेष घटक 64	
	प्रावधान	व्यय	प्रावधान	व्यय	प्रावधान	व्यय
2014-15	21591.23	15676.75	7412.68	5864.91	5793.68	4975.45
2015-16	23396.55	16666.86	8933.24	3517.21	7223.04	4135.11

2.3 वित्तीय आयोजना वर्ष 2016-17 बजट एवं व्यय (राशि ` लाख में)

क्र.	योजना शीर्ष	प्रावधान	व्यय (माह दिस0 तक)
1.	मांग संख्या 14-पशुपालन	25240.02	11176.15
2.	मांग संख्या 41- आदिवासी क्षेत्र उपयोजना	11130.56	6100.61
3.	मांग संख्या 64-अनुसूचित जाति उपयोजना	7489.69	3875.52
4.	मांग संख्या 57-जल संसाधन विभागों से संबंधित विदेशों से सहायता प्राप्त परियोजनायें	0.02	0.00
5.	मांग संख्या 61-बुन्देलखंड पैकेज से संबंधित व्यय	5082.00	4284.00
6.	मांग संख्या 74-त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाओं को वित्तीय सहायता	1389.27	1241.84
7.	मांग संख्या 52-आदिवासी क्षेत्र उपयोजना के अन्तर्गत त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाओं को वित्तीय सहायता	200.00	176.62

योग	50531.56	26854.75
------------	-----------------	-----------------

भाग-तीन

राज्य योजनाएं तथा केन्द्र प्रवर्तित योजनाएं

3.1 हितग्राही मूलक योजनाएं

बारहवीं पंचवर्षीय योजनान्तर्गत राज्य की हितग्राहीमूलक योजनाएं निम्नानुसार हैं :

3.1.1 आचार्य विद्यासागर गौ संवर्धन योजना

यह योजना सभी वर्ग के हितग्राहियों के लिए है। इस योजना का उद्देश्य दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना, पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में वृद्धि तथा रोजगार के अवसर प्रदान करना है।



पशुपालक न्यूनतम 5या इससे अधिक पशु की योजना स्वीकृत करा सकेगा। तथा परियोजना की अधिकतम सीमा राशि ` 10 लाख तक होगी। परियोजना लागत का 75% राशि बैंक ऋण के माध्यम से प्राप्त करनी होगी तथा शेष राशि की व्यवस्था मार्जिन मनी सहायता एवं हितग्राही का स्वयं के अंशदान के रूप में करनी होगी। मार्जिनमनी सहायता सामान्य वर्ग हेतु परियोजना लागत का 25%, अधिकतम राशि ` 1.50 लाख तथा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति हेतु परियोजना लागत का 33% , अधिकतम राशि ` 2 लाख। इकाई लागत के 75% पर या हितग्राही द्वारा बैंक से प्राप्त ऋण पर जो भी कम हो 5% वार्षिक ब्याज की दर से (अधिकतम राशि ` 25000 प्रतिवर्ष) ब्याज की प्रतिपूर्ति 7 वर्षों तक विभाग द्वारा की जाएगी। 5% से अधिक शेष ब्याज दर पर ब्याज की प्रतिपूर्ति हितग्राही को स्वयं करनी होगी।

3.1.2 बड़े पशुओं का उत्प्रेरण

3.1.2.1 नन्दीशाला योजना

योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की स्थानीय अवर्णित गौवंशीय पशुओं की नस्ल सुधार हेतु देशी वर्णित नस्ल के सांडों का प्राकृतिक गर्भाधान सेवाएं हेतु पशुपालकों को अनुदान आधार पर प्रदाय करना है। योजना प्रदेश के सामान्य, आदिवासी, विशेष घटक के लिए है। योजना ग्राम पंचायत स्तर पर प्रगतिशील पशुपालकों को अनुदान के आधार पर वर्णित नस्ल गौ-सांड जैसे-



साहीवाल, थारपारकर, हरियाणा, गिर, गौलव,मालवी,निमाड़ी, केनकथा आदि नस्ल के गौ-सांड प्रदाय किए जाते हैं। प्रदेश के बाहर की नस्ल के देशी वर्णित गौ सांड हेतु योजना

की इकाई लागत का मूल्य (परिवहन एवं प्रदायित सांड के प्रथम 60दिवस के लिए पशु आहार सहित) राशि ` 25720 है जिसमें प्रति इकाई अनुदान 80% तथा हितग्राही अंशदान 20% निर्धारित है। तथा प्रदेश की नस्ल के गौसांड हेतु इकाई लागत राशि ` 18260 है जिसमें प्रति इकाई अनुदान 80% तथा हितग्राही अंशदान 20% निर्धारित है।

3.1.2.2 समुन्नत पशु प्रजनन कार्यक्रम (मुरा पाड़ा प्रदाय योजना)

योजना का उद्देश्य भैंसों में नस्ल सुधार करना है। ऐसे क्षेत्र जहाँ कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा उपलब्ध नहीं है वहाँ नस्ल सुधार हेतु उन्नत नस्ल के पेडीग्रीड मुरा पाड़े प्रदाय कर भैंसों में प्राकृतिक गर्भाधान की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु योजना प्रारम्भ की गई है। योजना अन्तर्गत प्रगतिशील पशुपालकों प्रशिक्षित गौसेवक एवं सभी वर्ग के लिए मध्य प्रदेश के सभी जिलों में संचालित है। इस योजना की इकाई लागत राशि ` 45000 है जिसमें सभी वर्गों को 80 प्रतिशत अनुदान एवं 20 प्रतिशत हितग्राही अंशदान का प्रावधान है।



3.1.3 छोटे पशुओं का उत्प्रेरण

3.1.3.1 बैक ऋण एवं अनुदान पर बकरी इकाई



प्रदेश के सभी जिलों में बैंक ऋण एवं अनुदान पर बकरी इकाई योजना संचालित है। योजना का उद्देश्य देशी बकरियों में नस्ल सुधार लाना, हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना, तथा मांस एवं दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करना है। योजनाबद्ध 10 बकरी एवं 1 बकरे की इकाई प्रदाय की जाती है। योजना की लागत राशि ` 77456 है। योजना अन्तर्गत अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के लिए 50 प्रतिशत अनुदान तथा सामान्य वर्ग के लिए 25 प्रतिशत अनुदान एवं 10 प्रतिशत अंशदान व शेष बैंक ऋण का प्रावधान है।

3.1.3.2 अनुदान पर नर बकरा प्रदाय

अनुदान पर बकरा प्रदाय योजना का उद्देश्य देशी बकरियों में नस्ल सुधार लाना, हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना, मांस तथा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करना है। यह योजना सभी वर्ग के बकरी पालकों के लिए है। योजना की इकाई लागत राशि ` 8300 है जिसमें बकरे का मूल्य के साथ बीमा, टीकाकरण, मिनरल मिक्चर एवं कृषि कृमिनाशक सम्मिलित है। उन्नत नस्ल का नर बकरा सभी वर्ग के बकरी पालकों को 80 प्रतिशत अनुदान पर उपलब्ध कराया जाता है।



अनुदान पर बकरा प्रदाय योजना का उद्देश्य देशी बकरियों में नस्ल सुधार लाना, हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना, मांस तथा दुग्ध उत्पाद में वृद्धि करना है। यह योजना सभी वर्ग के बकरी पालकों के लिए है। योजना की इकाई लागत राशि ` 8300 है जिसमें बकरे का मूल्य के साथ बीमा, टीकाकरण, मिनरल मिक्चर एवं कृषि कृमिनाशक सम्मिलित है। उन्नत नस्ल का नर बकरा सभी वर्ग के बकरी पालकों को 80 प्रतिशत अनुदान पर उपलब्ध कराया जाता है।

3.1.3.3 अनुदान पर नर सूकर प्रदाय

अनुदान पर नर सूकर योजना का उद्देश्य देशी/ स्थानीय सूकरों की नस्ल में सुधार लाकर हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना, तथा मांस उत्पादन में वृद्धि करना है। इस योजना की इकाई लागत राशि ` 5000 है जिसमें केवल अनुसूचित जाति के सूकर पालक को उन्नत नस्ल का नर सूकर 75 प्रतिशत अनुदान पर प्रदाय किया जाता है।

3.1.3.4 अनुदान पर सूकर त्रयी प्रदाय

अनुदान पर सूकर त्रयी योजना का उद्देश्य देशी/ स्थानीय सूकरों की नस्ल में सुधार लाकर हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना एवं मांस उत्पादन में वृद्धि करना है। योजना की इकाई लागत राशि ` 15000 है जिसमें केवल अनुसूचित जनजाति के सूकर पालक को उन्नत नस्ल का एक नर सूकर एवं दो मादा सूकर 75 प्रतिशत अनुदान पर प्रदाय किया जाता है।

3.1.3.5 अनुदान पर बैकयार्ड कुक्कुट इकाई प्रदाय

अनुदान पर बैकयार्ड कुक्कुट इकाई योजना का उद्देश्य अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के लोगों में पोषण स्तर में सुधार लाने तथा अतिरिक्त आय के स्रोत उपलब्ध कराना है। योजना में बिना लिंग भेद वाले 28 दिवसीय 40 लो इनपुट टेक्नोलॉजी के चूजे, औषधि व परिवहन व्यय सम्मिलित है। इस योजना की इकाई लागत राशि ` 2225 है जिसमें अनुदान 80 प्रतिशत राशि ` 1780 तथा हितग्राही अंशदान 20 प्रतिशत राशि ` 445 है।



3.1.3.6 अनुदान पर कड़कनाथ चूर्ण का प्रदाय



अनुदान पर कड़कनाथ चूजों का प्रदाय योजना का उद्देश्य अनुसूचित जनजाति वर्ग के लोगों को कुक्कुट पालन के माध्यम से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने तथा कड़कनाथ नस्ल के संरक्षण के साथ-साथ उनका पोषण स्तर बढ़ाना है। योजना में हितग्राहियों को बिना लिंग भेद के 28 दिवसीय 40 कड़कनाथ चूजे, खाद्यान्न व औषधि, परिवहन व्यय सहित प्रदाय किए जाते हैं। योजना की इकाई लागत राशि ` 4400 है जिसमें 80 प्रतिशत् अनुदान राशि ` 3520 तथा हितग्राही अंशदान 20 प्रतिशत् राशि ` 880 है।

3.1.4 वत्सपालन प्रोत्साहन योजना



योजना का उद्देश्य प्रदेश में भारतीय देशी नस्ल के गौवंश को बढ़ावा देने के लिए पशुपालकों को प्रोत्साहित करना एवं उनके पास उपलब्ध उच्च अनुवांशिक गुणों वाले वत्सों का संरक्षण एवं संवर्धन करना है। योजना में ऐसे पशु पालक जिनके पास भारतीय देशी

उन्नत नस्ल की गाय है तथा जिनका दुग्ध उत्पादन उस नस्ल के पशुओं के औसत दुग्ध उत्पादन से 30 प्रतिशत अधिक है एवं उसका वत्स उच्च आनुवांशिक क्षमता वाले भारतीय नस्ल के सांड के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान अथवा प्राकृतिक गर्भाधान द्वारा पैदा हुआ है। ऐसी गायों के पशुपालकों को प्रोत्साहित करने के लिए राशि ` 5,000 एवं उनके वत्सों के संरक्षण हेतु राशि ` 500 प्रतिमाह पशु आहार/औषधी के रूप में 0-4 माह की उम्र से दो वर्षों तक अनुदान के रूप में प्रदाय की जाती है। इस प्रकार योजना की इकाई लागत राशि ` 17000 है इस योजना में नर एवं मादा दोनों प्रकार के वत्स लाभान्वित हो सकेंगे।

3.1.5 गौसेवक प्रशिक्षण योजना

योजना का मुख्य उद्देश्य शिक्षित बेरोजगार ग्रामीण युवकों को स्वरोजगार हेतु सक्षम बनाना एवं सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक पशु चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराना है। योजनान्तर्गत प्रत्येक ग्राम पंचायत में 10वीं उत्तीर्ण एक स्थानीय बेरोजगार युवक को छः माह का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षित गौसेवक अपने ग्राम पंचायत क्षेत्र में पशुओं को प्राथमिक उपचार प्रदान कर स्वरोजगार स्थापित करते हैं।



बारहवीं पंचवर्षीय योजनान्तर्गत प्रशिक्षण हेतु राशि ` 1000 प्रति माह के मान से छः माह हेतु राशि ` 6000 स्टायपेन्ड एवं राशि ` 1200 की किट, इस प्रकार कुल राशि ` 7200 प्रति गौसेवक का प्रावधान है।

3.1.6 देशी नस्ल की सबसे अधिक दुधारु गायों हेतु गोपाल पुरस्कार योजना

भारतीय देशी नस्ल के गौवंशीय पशुओं के पालन को बढ़ावा देने एवं अधिक दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए गोपाल पुरस्कार योजना संचालित की गई है। योजनान्तर्गत अधिक दुग्ध उत्पादन करने वाली भारतीय नस्ल की गाय हेतु प्रतियोगिता वर्ष में एक बार आयोजित की जाती है इस प्रतियोगिता में सभी वर्ग के पशुपालक जिनके पास भारतीय देशी नस्ल की गाय उपलब्ध हो एवं कम से कम 4 लीटर दूध प्रतिदिन देती हो, भाग ले सकते हैं। अधिक दुग्ध उत्पादन करने वाली भारतीय नस्ल की गाय के पशुपालक को प्रतियोगिता में पुरस्कार दिया जाता है जिससे पशुपालकों को अतिरिक्त आय का साधन मिलने के साथ ही देशी नस्ल के दुधारु पशुओं के पालन को प्रोत्साहन मिलता है एवं भारतीय उन्नत नस्ल के गौवंशीय उत्पादक पशुओं की संख्या में वृद्धि होती है।

योजना अन्तर्गत पुरस्कार :-

विकासखण्ड स्तरीय पुरस्कार :-	प्रथम पुरस्कार	` 10,000
	द्वितीय पुरस्कार	` 7,500
	तृतीय पुरस्कार	` 5,000
जिला स्तरीय पुरस्कार :-	प्रथम पुरस्कार	` 50,000

	द्वितीय पुरस्कार	` 25,000
	तृतीय पुरस्कार	` 15,000
सांत्वना पुरस्कार (7पुरस्कार)		` 35,000
राज्य स्तरीय पुरस्कार :-	प्रथम पुरस्कार	` 2,00,000
	द्वितीय पुरस्कार	` 1,00,000
	तृतीय पुरस्कार	` 50,000
सांत्वना पुरस्कार (7पुरस्कार)		` 70,000



तालिका 3.1

हितग्राहीमूलक योजना के अन्तर्गत विगत तीन वर्षों की वित्तीय उपलब्धि
(राशि : लाख में)

क्रं	योजना का नाम	वर्ष					
		2014-15		2015-16		2016-17 (माह दिस0तक)	
		प्राप्त	व्यय	प्राप्त	व्यय	प्राप्त	व्यय (माह दिस0 तक)
1	वत्सपालन प्रोत्साहन योजना	352.00	352.00	487.91	487.91	641.62	605.88
2	अनुदान पर सांड (मुर्दा पाड़ा) प्रदाय	386.54	386.54	420.16	420.16	781.92	781.92
3	नन्दीशाला योजना	243.57	242.70	298.00	298.00	384.56	384.56
4	अनुदान पर नर	299.80	299.80	399.00	399.00	363.27	363.27

वर्ष							
क्रं	योजना का नाम	2014-15		2015-16		2016-17 (माह दिस0 तक)	
		प्राप्त	प्राप्त	प्राप्त	व्यय	प्राप्त	व्यय (माह दिस0 तक)
	बकरा प्रदाय						
5	बैंक ऋण एवं अनुदान पर बकरी इकाई का प्रदाय	142.00	140.00	217.70	217.70	229.07	229.07
6	बैंक ऋण एवं अनुदान पर डेयरी इकाई	571.66	559.26	846.59	846.59	0	0
7	अनुदान पर सूकर त्रयी/नर सूकर का प्रदाय	29.85	28.86	31.40	31.40	54.26	54.26
8	अनुदान पर बैकयार्ड कुक्कुट इकाई का प्रदाय	97.05	91.45	124.77	112.14	73.33	73.42
9	अनुदान पर कड़कनाथ चूर्णों का प्रदाय	32.34	32.34	32.59	24.62	42.52	21.33
10	आचार्य विद्या सागर गौसंवर्धन योजना	339.42	296.49	350.00	335.23	1575.00	600.00

तालिका 3.2
हितग्राहीमूलक कार्यक्रम के अन्तर्गत विगत तीन वर्षों की भौतिक उपलब्धि

वर्ष							
क्रं०	योजना का नाम	2014-2015		2015-2016		2016-2017	
		लक्ष्य	पूर्ति	लक्ष्य	पूर्ति	लक्ष्य	पूर्ति (माह दिस० तक)
1	वत्सपालन प्रोत्साहन योजना	2070	2070	2872	2872	3773	3564
2	अनुदान पर सांड (मुर्रा पाड़ा) प्रदाय	2195	2195	2851	2851	2172	2172
3	नन्दीशाला योजना	1733	1733	1825	1825	1869	1869
4	अनुदान पर नर बकरा प्रदाय	7996	7496	9980	9980	6096	6096
5	बैंक ऋण एवं अनुदान पर बकरी इकाई प्रदाय	1081	1069	1548	1548	864	864
6	बैंक ऋण एवं अनुदान पर डेयरी इकाई प्रदाय	1971	1926	2661	2661	0	0
7	अनुदान पर सूकर त्रयी/नर सूकर का प्रदाय	898	854	837	837	863	863
8	अनुदान पर बैकयार्ड कुक्कुट इकाई का प्रदाय	8084	6730	10398	8226	4120	3732
9	अनुदान पर कड़कनाथ चूर्णों का प्रदाय	1923	920	1940	1455	1208	606
10	आचार्य विद्या सागर गौसंवर्धन योजना	2300	2271	2550	2048	900	प्रकरण स्वीकृत

3.2 पशु चिकित्सा सेवाओं का विस्तार

योजनान्तर्गत 3 घटक संचालित है:

3.2.1 पशु औषधालय का पशु चिकित्सालय में उन्नयन

योजना का मुख्य उद्देश्य पशुपालकों को गुणवत्तायुक्त पशु चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने हेतु पशु औषधालयों का पशु चिकित्सालयों में उन्नयन किया जाता है योजना की इकाई लागत राशि ` 15.50 लाख है। जिसमें अधोसंरचना विकास हेतु राशि `8.60लाख, फर्नीचर हेतु राशि `0.25 लाख, उपकरण हेतु राशि `0.50लाख, औषधि प्रदाय हेतु राशि `0.25 लाख एवं वेतन-भत्ते हेतु राशि ` 5.90लाख प्रावधानित है।



3.2.2 नवीन पशु औषधालय की स्थापना

योजनान्तर्गत पशुपालकों को कम दूरी पर पशु चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने हेतु नवीन पशु औषधालय की स्थापना की जाती है। योजना की इकाई लागत राशि `9.12 लाख जिसमें अधोसंरचना विकास हेतु राशि `6.60 लाख, फर्नीचर हेतु राशि `0.20 लाख, उपकरण हेतु राशि `0.25 लाख, औषधि प्रदाय हेतु राशि ` 0.15 लाख एवं वेतन-भत्ते हेतु राशि `1.92 लाख प्रावधानित है।



3.2.3 अनुबंध के आधार पर चल पशु चिकित्सा इकाइयों का संचालन

यह योजना प्रदेश के 89 आदिवासी विकासखण्डों में पशुपालकों को घर पहुंच पशु चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संचालित की जा रही है। चल पशु चिकित्सा इकाईयों का संचालन बाहरी एजेंसी के माध्यम से किया जा रहा है।



3.3 भ्रूण प्रत्यारोपण प्रयोगशाला की स्थापना

राज्य शासन द्वारा आयोजना मद से 12वीं पंचवर्षीय योजना काल के लिए भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीकी प्रयोगशाला की स्थापना हेतु कुल राशि ` 10.00 करोड़ की परियोजना स्वीकृत की गई है। उक्त प्रयोगशाला के संचालन हेतु वर्ष 2015-16 में राशि ` 235 लाख के बजट का प्रावधान किया गया है। इस भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीकी प्रयोगशाला की स्थापना का उद्देश्य उच्च अनुवांशकीय गुणवत्ता वाली गाय से उसके सम्पूर्ण प्रजनन काल में अधिक से अधिक संतति प्राप्त करना, अधिक उत्पादन वाले पशुओं की संख्या में तेजी से वृद्धि कर दुग्ध उत्पादन बढ़ाना, केन्द्रीय वीर्य संस्थान के द्वारा गायों की नस्ल सुधार के लिए हिमीकृत वीर्य उत्पादन हेतु उच्च अनुवांशिक क्षमता के साड़ों का उत्पादन, गाय की देशी नस्लों का संरक्षण एवं संवर्धन, प्रजनन की चयन पद्धति से देशी दुधारु गायों की नस्ल साहीवाल एवं गिर नस्ल में उन्नयन कर दुग्ध उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना। इसके अतिरिक्त इस तकनीक द्वारा उच्च गुणवत्ता वाली डोनर गायों को चयनित कर हारमोन्स की मदद से सुपर ओवूलेट किया जाता है तत्पश्चात उच्च अनुवांशिक क्षमता वाले सांड के हिमीकृत वीर्य द्वारा उसका गर्भाधान कराया जाता है। गर्भाधान के सातवें दिन गर्भाशय से भ्रूण निकाले जाकर रेशीपियंट गायों में प्रत्यारोपित कर दिए जाते हैं अथवा हिमीकृत कर सुरक्षित कर दिए जाते हैं।

3.4 पशु आश्रय स्थल आसरा

निराश्रित पशुओं को उपचार व आश्रय उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पशु आश्रय स्थल आसरा भोपाल में “आसरा” के नाम से यह योजना प्रारम्भ की गई है।

आसरा के उद्देश्य

- (i) घायल बीमार निराश्रित पशु पक्षियों को प्रतिकूल वातावरण जैसे तेज धूप, गर्म हवा, बरसात से बचा कर सुरक्षित रखने की व्यवस्था एवं उनके खान-पान तथा उचित उपचार की व्यवस्था जब तक वे पूर्ण रूप से स्वस्थ न हो जाए।
- (ii) घायल पशु-पक्षियों को जंगली एवं हिंसक जानवरों से सुरक्षा कर आश्रय देना।
- (iii) उपयोगी बेसहारा पशु पक्षियों को पूर्णतः स्वस्थ होने के उपरान्त स्वयं सेवा संस्थाओं, इच्छुक पशु पालकों को उनकी स्वेच्छा से रखने की स्थिति में उन तक पहुँचना जिससे उनकी उपयोगिता सिद्ध हो सके।
- (iv) पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के अनुपालन में सहयोग करना।
- (v) एंटीरेबीज टीकाकरण कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार तथा सहयोग।
- (vi) जागरूकता शिविरों का आयोजन।

- (vii) बड़े पशुओं का टीकाकरण सुनिश्चित करने हेतु प्रोत्साहित करना।
- (viii) पशु-पक्षियों के कल्याण हेतु अन्य ऐसे सभी कार्यों को जो उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति कर सके।
- (ix) पशु आश्रय स्थल की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार करना।
- (x) छोटे पशु (श्वानों) के लिए जन्म नियंत्रण कार्यक्रम प्रोत्साहित करना साथ ही नगर निगम के सहयोग से श्वानों की नसबंदी एवं एंटीरैबीज का टीकाकरण भी किया जाता है, ताकि क्षेत्र को रैबीज रोग से मुक्त रखा जा सके।

3.5 पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय

प्रदेश में पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना 3नवम्बर 2009 को जबलपुर में की गई थी। इस विश्वविद्यालय अन्तर्गत पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय जबलपुर महु एवं रीवा आते हैं। कुक्कुट प्रक्षेत्र जबलपुर एवं वृषभ पालन केन्द्र आमनाला जबलपुर जो कि पहले पशुपालन विभाग के अन्तर्गत आते थे उन्हें पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय को हस्तान्तरित किया गया है। विश्वविद्यालय अन्तर्गत तीनों महाविद्यालयों में बी.व्ही.एस.सी एण्ड ए.एच की स्नातक डिग्री प्रदाय की जाती है तथा पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय जबलपुर एवं महु में एम.व्ही.एस.सी एण्ड ए.एच की स्नातकोत्तर डिग्री प्रदाय की जाती है। वर्ष 2011-12 से विश्वविद्यालय द्वारा जबलपुर महु, रीवा, भोपाल में तथा मुरैना में डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है।

3.6 ई-वेट परियोजना

पशुपालकों को सूचना तकनीक का प्रयोग करते हुए कम लागत में घर पहुँच पशु उपचार सुविधा उपलब्ध कराने हेतु ई-वेट परियोजना प्रारम्भ की गई है। उक्त परियोजना के तहत पैरावेट्स पशुपालक से सूचना प्राप्त होने पर रोगी पशु का परीक्षण करने के उपरान्त सूचना तकनीक का प्रयोग करते हुए पशु चिकित्सक को रोगी पशु के लक्षण आदि से अवगत कराएंगे। पशु चिकित्सक उपरोक्त जानकारी ऑनलाइन प्राप्त होने पर पशु उपचार पर्ची इलेक्ट्रानिकली ऑन लाइन जारी करेंगे जिसके आधार पर पैरावेट रोगी पशु का उपचार करेगा। इस तकनीक के माध्यम से पशुपालकों को गुणवत्ता पूर्ण एवं पशु चिकित्सक के ऑन-लाईन पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन में पशु उपचार प्राप्त होता है।

तालिका 3.3
राज्य योजना के अन्तर्गत विगत तीन वर्षों की वित्तीय उपलब्धि
(राशि ` लाख में)

		वर्ष					
क्रं	योजना का नाम	2014-15		2015-16		2016-17	
		प्राप्त	व्यय	प्राप्त	व्यय	प्राप्त	व्यय (माह दिस0तक)
1	पशु चिकित्सा विस्तार	3015.13	2021.36	2328.75	1980.37	2090.59	1753.74

	कार्यक्रम						
2	अधोसंरचना विकास	250.00	142.00	510.00	510.00	479.42	429.42

तालिका 3.4 राज्य योजनान्तर्गत विगत तीन वर्षों की भौतिक उपलब्धि

		वर्ष					
क्र०	योजना का नाम	2014-2015		2015-2016		2016-2017	
		लक्ष्य	लक्ष्य	लक्ष्य	पूर्ति	लक्ष्य	पूर्ति (माह दिस0तक)
1	पशु चिकित्सा विस्तार कार्यक्रम (नवीन पशु औषधालयों की स्थापना एवं पशु औषधालयों का पशु चिकित्सालयों में उन्नयन)	111	111	76	74	23	23
2	अधोसंरचना विकास	12	12	34	34	39	39

3.7 केन्द्रीय प्रवर्तित योजनाएं

3.7.1 राष्ट्रीय पशुधन मिशन (National Live Stock Mission)

भारत सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2014-15 में 7 केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं एवं 7 केन्द्रीय क्षेत्रीय योजनाओं को सम्मिलित कर आवश्यक संशोधन करते हुए राष्ट्रीय पशुधन मिशन (National Livestock Mission) तैयार किया गया है। भारत शासन द्वारा जारी किए गए दिशा-निर्देश एवं संयुक्त सचिव भारत सरकार पशुपालन डेयरी एवं मत्स्यपालन विभाग कृषि भवन नई दिल्ली के पत्र क्रमांक 2-47/2009-/FF, दिनांक 06.06.2014 के अनुसार राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अन्तर्गत आवश्यक समिति गठन, गतिविधि क्रियान्वयन एवं आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन के उद्देश्य निम्नानुसार हैं-

- (i) कुक्कुट को सम्मिलित करते हुए पशुधन क्षेत्र का समग्र एवं स्थाई विकास।
- (ii) भौगोलिक आवश्यकता के अनुसार खाद्य, चारा बीज की मांग एवं पूर्ति के अन्तर में कमी करना, चारा उत्पादन का रकबा बढ़ाना, विस्तार कार्य एवं कटाई के बाद का प्रबन्धन करना तथा चारे की विविध जलवायु क्षेत्रों के अनुरूप प्रोसेसिंग करना।

- (iii) कृषकों की सक्रिय भागीदारी (कृषक सहकारिता, बीज निगम, एवं निजी क्षेत्र के उद्यमी को सम्मिलित करते हुए) प्रभावी चारा उत्पादन श्रृंखला के द्वारा गुणवत्तापूर्ण खाद्य एवं चारा बीज उत्पादन बढ़ाना।
- (iv) स्थाई एवं समग्र पशुधन विकास के लिए चल रही योजनाओं एवं उसके विभिन्न साझेदारों के बीच समन्वय एवं सहयोगिता बढ़ाना।
- (v) पशु पोषण एवं पशु उत्पादन के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में व्यावहारिक अनुसंधान को बढ़ावा देना।
- (vi) पशुपालकों को गुणवत्तापूर्ण विस्तार सेवाएं प्रदान करने के लिए शासकीय कर्मचारियों एवं कृषकों को प्रशिक्षित करना।
- (vii) पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने एवं उत्पादन लागत कम करने के लिए कौशल संवर्धन हेतु प्रशिक्षण एवं तकनीकी का कृषकों तक विस्तार करना।
- (viii) कृषक तथा कृषक समूह सहकारिता द्वारा देशी नस्लों के संरक्षण एवं जेनेटिक उन्नयन के पहल को बढ़ावा देना। (बोवाइन को छोड़कर)
- (ix) स्माल एवं मार्जिनल कृषकों एवं कृषकों व कृषक समूह तथा सहकारिता/उत्पादन कम्पनियों के निर्माण को बढ़ावा देना।
- (x) पशुधन क्षेत्र से संबंधित मौलिक पायलट प्रोजेक्ट को बढ़ावा देना एवं सफल पायलट प्रोजेक्ट का विस्तार करना।
- (xi) कृषक के उद्यम की मार्केटिंग, प्रसंस्करण तथा मूल्य वृद्धि के लिए अधोसंरचना एवं रूप-रेखा तैयार करना।
- (xii) जोखिम प्रबंधन के उपायों को बढ़ावा देने के साथ कृषकों को पशुधन बीमा की सुविधा देना।
- (xiii) पशुओं में बीमारियों की रोकथाम को बढ़ावा देना, पर्यावरण प्रदूषण रोकना, खाद्य सुरक्षा, गुणवत्ता के प्रयासों को बढ़ावा देना। पशु शव का समय पर उपयोग करते हुए उत्तम गुणवत्ता का चमड़ा उपलब्ध कराने के प्रयासों को बढ़ावा देना।
- (xiv) पशुपालन गतिविधियों में सामूहिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना, नस्ल संरक्षण में समुदाय की सहभागिता को बढ़ावा देना एवं राज्य के संसाधनों को बढ़ाने के लिए रूप-रेखा तैयार करना।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय पशुधन मिशन को चार उप-मिशन की गतिविधियों के अनुसार संचालित किया जा रहा है-

1. उप-मिशन - पशुधन विकास
2. उप-मिशन - पूर्वोत्तर क्षेत्र में सूकर विकास
3. उप-मिशन - पशु खाद्य एवं चारा विकास
4. उप-मिशन - दक्षता संवर्धन, तकनीकी हस्तान्तरण एवं विस्तार प्रदेश में उप-मिशन अन्तर्गत निम्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं-

3.7.1.1 राष्ट्रीय पशुधन मिशन ग्रामीण बैकयार्ड कुक्कुट विकास योजना

भारत सरकार द्वारा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले समस्त वर्गों के हितग्राहियों के लिए 100 प्रतिशत अनुदान पर यह योजना वर्ष 2010-11 से मध्यप्रदेश में प्रारम्भ की गई है। वर्ष 2014 से यह योजना को संशोधित कर राष्ट्रीय पशुधन मिशन में सम्मिलित कर 75 प्रतिशत केन्द्रांश व 25 प्रतिशत राज्यांश पर संचालित

है। वर्ष 2016-17 से यह योजना 60 प्रतिशत केन्द्रांश व 40 प्रतिशत राज्यांश पर संचालित की जा रही है। योजना की इकाई लागत राशि ` 3,525 है।

योजनान्तर्गत प्रत्येक हितग्राही को बिना लिंग भेद के 4 सप्ताह के लो इनपुट टेक्नॉलोजी वाले 45 पक्षी तीन चरणों में क्रमशः 25 व 20 चूजे प्रदाय किए जाते हैं। साथ ही पक्षियों के लिए दढ़बा बनाने हेतु राशि ` 1,500 दिए जाने का प्रावधान है जो सीधे हितग्राही के खाते में जमा किए जाते हैं।

एक मदर यूनिट से 300 हितग्राहियों को चूजे प्रदाय किए जाते हैं मदर यूनिट के हितग्राही को राशि ` 60,000 अनुदान दिए जाने का प्रावधान है जो सीधे उनके खाते में जमा किया जाता है। मदर यूनिट के हितग्राही को 4 सप्ताह के चूजों की राशि ` 40 प्रति चूजा का भुगतान उनके द्वारा चूजे बी. पी. एल. हितग्राहियों को प्रदाय उपरान्त किया जाता है।

3.7.1.2 रिस्क मैनेजमेंट एवं पशुधन बीमा

योजना का उद्देश्य पशुपालकों को उनके पशुओं हेतु बीमे की सुविधा प्रदान कर, दुधारू/गैर-दुधारू पशुओं की मृत्यु से होने वाली हानि की क्षतिपूर्ति करना एवं होने वाली आर्थिक हानि को रोकना है। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पशुधन मिशन (National Livestock Mission) के अन्तर्गत रिस्क मैनेजमेंट एवं इन्श्योरेन्स के नाम से नवीन पशुधन बीमा योजना प्रदेश के समस्त 51 जिलों में वर्ष 2014-15 से म.प्र.राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम के द्वारा क्रियान्वित की जा रही है। योजनांतर्गत सभी प्रकार के पशुओं का बीमा दुधारू देशी/संकर गाय व भैंस, अन्य पशु जैसे घोड़ा, गधा, ऊंट, नर गौवंश व भैंसवंश, बकरी, भेड़, सूकर, खरगोश आदि पशुओं का बीमा कर लाभान्वित किए जाने का प्रावधान है। 10भेड़,बकरी की संख्या को एक इकाई माना गया है। बीमा हेतु अधिकतम एक वर्ष के लिए 3% तथा 3वर्ष के लिए 7.5% प्रीमियम दर निर्धारित की गई है। ए.पी.एल हितग्राही हेतु केद्रांश 25 प्रतिशत, राज्यांश 25 प्रतिशत एवं 50 प्रतिशत हितग्राही अंशदान से तथा अनुसूचित जाति, जनजाति, गरीबी रेखा से नीचे वाले हितग्राहियों हेतु केद्रांश 40 प्रतिशत, राज्यांश 30 प्रतिशत एवं 30 प्रतिशत हितग्राही अंशदान पर संचालित की जा रही है। वित्तीय वर्ष 2016-17 में माह दिसम्बर तक 25,986 पशुओं का बीमा किया है।

3.7.1.3 चारा विकास

यह योजना भारत सरकार द्वारा पशुपालकों चारा एवं चारा बीज उत्पादन, चारे के संरक्षण तथा उसके उत्पादों के सही उपयोग उत्प्रेरण हेतु संचालित है। वर्ष 2012-13 में 10 हेक्टेयर के प्रति इकाई के मान से 3 प्रक्षेत्रों क्रमशः बुलमदर फार्म 1 इकाई, पशु प्रजनन प्रक्षेत्र बांसाखेड़ी जिला मंदसौर 1 इकाई एवं पशु प्रजनन प्रक्षेत्र मिनौरा जिला टीकमगढ़ 3 इकाई, इस प्रकार कुल 5 इकाई में 50 हेक्टेयर में चारागाह विकास कार्यक्रम किया गया है। वर्ष 2015 में योजनांतर्गत गतिविधि अजोला उत्पादन एवं प्रदर्शन के अन्तर्गत जिला रायसेन एवं जिला रीवा के स्माल होल्डर पोल्ट्री स्कीम हेतु 400 हितग्राहियों को प्रदर्शन इकाई की स्थापना द्वारा लाभान्वित किया गया है।



चारा बीज उत्पादन कार्यक्रम के अन्तर्गत शिवपुरी जिले में खरीफ वर्ष 2014 में 250 किंचंटल मक्का चारा बीज उत्पादन किया गया जिसे खरीफ वर्ष 2015 में प्रदेश के 21 जिलों के पशुपालकों को चारा उत्पादन कार्यक्रम हेतु निःशुल्क बीज वितरण किया गया है। इसी प्रकार रबी वर्ष 2014 में 106 किंचंटल वर्सीम चारा बीज उत्पादन कर रबी वर्ष 2015 में प्रदेश के 13 जिलों के पशुपालकों को तथा 144 किंचंटल वर्ष 2016-17 में 18 जिलों के पशुपालकों को निःशुल्क बीज वितरण किया गया है।

3.7.2 एकीकृत नमूना सर्वेक्षण

यह योजना केन्द्रांश व राज्यांश के 50:50 के अनुपात में वित्त पोषित है। इस योजनान्तर्गत एकीकृत नमूना सर्वेक्षण के आधार पर दूध, अण्डा, ऊन व मांस जैसे प्रमुख पशुधन उत्पादों के उत्पादन का आंकलन किया जाता है। भारत सरकार के निर्देशानुसार पशुधन उत्पाद का आंकलन ऋतुवार तथा वार्षिक आधार पर किया जाता है।

3.7.3 राष्ट्रीय पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण

केन्द्र व राज्य शासन के क्रमशः 60:40 के अनुपात में वित्तीय प्रबन्ध के आधार पर यह योजना संचालित है। इस योजनान्तर्गत आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण पशुधन व कुक्कुट रोगों के नियंत्रण के लिए टीकाकरण, पशु स्वास्थ्य एवं जैविक उत्पाद संस्थान, पशु रोग अनुसंधान प्रयोगशालाओं के सुदृढीकरण, पशु चिकित्सा संस्थाओं का सुदृढीकरण विभिन्न संक्रामक बीमारियों के नियंत्रण हेतु कार्यक्रम, पशु चिकित्सकों व पैरावेट को सेवाकालीन प्रशिक्षण का प्रावधान आदि रहता है। इस योजना के निम्नलिखित घटक हैं:

3.7.3.1 पशु रोगों के नियंत्रण हेतु राज्यों को सहायता

3.7.3.2 व्यवसायिक दक्षता कार्यक्रम

3.7.3.3 पशु चिकित्सालयों एवं औषधालयों की स्थापना एवं सुदृढीकरण

3.7.3.4 एफ.एम.डी. नियंत्रण कार्यक्रम

3.7.3.5 पी.पी.आर. नियंत्रण कार्यक्रम

3.7.3.6 मातामहामारी के सर्वेक्षण एवं मॉनीटरिंग हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम

3.7.4 मैत्री योजना

यह योजना भारत सरकार द्वारा एनपीबीबी योजनान्तर्गत वर्ष 2014-15 से संचालित है। इस योजना के तहत गौसेवकों को 4 माह का कृत्रिम गर्भाधान का प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें 1 माह का सैद्धांतिक प्रशिक्षण कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण संस्थाओं में एवं 3 माह का प्रायोगिक प्रशिक्षण जिलों के कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों/पशु चिकित्सालयों में दिया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान प्रति प्रशिक्षणार्थी राशि ` 4000 प्रतिमाह के हिसाब से कुल 4 माह की प्रशिक्षण अवधि हेतु कुल राशि ` 16000 स्टार्टअप के रूप में दी जाती है। प्रशिक्षण उपरांत उन्हें कृत्रिम गर्भाधान किट प्रदाय की जाती है ताकि वे क्षेत्र में जाकर कृत्रिम गर्भाधान कार्य एवं अन्य कार्य प्रारंभ कर सकें।

मैत्री द्वारा कार्य प्रारंभ करने के उपरांत उन्हें 3 वर्षों के लिए टेपरिंग ग्रांट दिए जाने का प्रावधान है जिसमें प्रथम वर्ष में राशि ` 1500 प्रति माह, द्वितीय वर्ष में राशि ` 1200 प्रतिमाह एवं तृतीय वर्ष में राशि ` 800 प्रतिमाह टेपरिंग ग्रांट के रूप में दी जाती है।

3.7.5 पशु संगणना

केन्द्रीय क्षेत्रीय योजनान्तर्गत मध्यप्रदेश राज्य में 20वीं पशु संगणना भारत सरकार के निर्देशन में संदर्भ तिथि 16 जुलाई 2017 से 15 अक्टूबर 2017 के मध्य प्रदेश के सभी आबाद ग्रामों में परिवारों के सूचीबद्ध के साथ गणना कार्य सम्पन्न कराया जाएगा। भारत सरकार के निर्देशानुसार 20वीं पशु संगणना 2017 हेतु संगणना कार्य में संलग्न होने वाले प्रगणकों/ सुपरवाइजर्स/जांच अधिकारी की नियुक्ति, प्रगणकों/ सुपरवाइजर्स/ जांच अधिकारी के कोड तथा ORGI द्वारा जनगणना 2011 के अनुसार आबाद ग्रामों की सूची कोड सहित उपलब्ध कराई गई है।

3.7.6 बुन्देलखण्ड विशेष पैकेज

बुन्देलखण्ड विशेष पैकेज के अन्तर्गत 6 जिलों कमशः सागर, दमोह, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, दतिया सम्मिलित किए गए हैं। बुन्देलखण्ड क्षेत्र के पशुपालको को लाभान्वित एवं रोजगार उपलब्ध कराने हेतु डेयरी विकास कार्यक्रम एवं नस्ल सुधार कार्यक्रम जैसे कार्यों को लिया गया है। विभाग द्वारा भारत सरकार को प्रथम चरण में ए. सी.ए. (अतिरिक्त केन्द्रीय सहायता) घटक में ` 80.70 करोड़ विभाग को प्राप्त हुए हैं जिसका शत-प्रतिशत उपयोग किया गया है।

इसी प्रकार बारहवीं पंचवर्षीय योजनान्तर्गत बुन्देलखण्ड विशेष पैकेज के द्वितीय चरण में विभाग हेतु राशि ` 80 करोड़ की योजनाएं भारत सरकार द्वारा स्वीकृत की गईं। भारत सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष हेतु राशि ` 50.82 करोड़ एवं अद्यतन स्थिति में कुल राशि ` 68.87 करोड़ विमुक्त की गई है। विभाग द्वारा दिसम्बर 2016 तक गतिविधियों

की क्रियान्वयन एजेन्सी क्रमशः मध्यप्रदेश राज्य दुग्ध सहकारी संघ मर्यादित, मध्यप्रदेश राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम तथा उप संचालक कार्यालयों को कुल राशि ` 60.89 करोड़ उपलब्ध कराई गई है जिसमें से राशि ` 29.46 करोड़ व्यय किया जा चुका है।



तालिका 3.5

बुन्देलखण्ड विशेष पैकेज के अन्तर्गत प्रगति

प्रथम चरण

क्रं.	गतिविधि	भौतिक लक्ष्य	भौतिक प्रगति	उपलब्धि प्रतिशत
1	म0प्र0राज्य सहकारी दुग्ध संघ द्वारा डेयरी डेवलपमेंट एक्टीविटी- डेयरी सोसाइटी का गठन बल्क मिल्क कूलर डेयरी प्लांट का सुदृढीकरण कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र दुग्ध टैंकर दुग्ध संकलन किग्रा/दिन	500 9 1 138 3 25000	561 14 1 138 3 38990	100
2	मुर्रा सांड प्रदाय	2403	2403	100
3	बकरी इकाई प्रदाय	5296	5296	100
4	फॉडर बैंक की स्थापना	3	3	100
5	मिनौरा जिला टीकमगढ में बकरी प्रक्षेत्र की स्थापना	1	1	100

6	एन.जी.ओ के माध्यम से पशुधन विकास केन्द्रों की स्थापना	110	110	100
7	म.प्र.राज्य सहकारी दुग्ध संघ द्वारा पशु आहार संयंत्र की स्थापना तथा दुग्ध उत्पाद के विपणन कार्य का सुदृढ़ीकरण	1	संयंत्र प्रारंभ	-
	रेफीजरेटेड वैन	2	2	100
	इन्सूलेटेड वैन	2	2	
	मिल्क टैंकर	5	5	

बुन्देलखण्ड विशेष पैकेज के अन्तर्गत प्रगति

द्वितीय चरण

क्रं.	गतिविधि	भौतिक प्रगति (माह दिसम्बर 2015 तक)	उपलब्धि प्रतिशत
1	म0प्र0राज्य सहकारी दुग्ध संघ द्वारा डेयरी डेवलपमेंट एक्टीविटी(प्रथम चरण में गठित समितियों का सुदृढ़ीकरण, अनुश्रवण, प्रशिक्षण) रिफ्रेशर ट्रेनिंग समिति सचिव प्रशिक्षण टैस्टर प्रशिक्षण पशु स्वास्थ्य रक्षक प्रशिक्षण 138कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों में गर्भाधान औसत दुग्ध संकलन किग्रा/दिन	469 185 124 140331 38990	21सितम्बर 2014 को अधिकतम 91332किग्रा0/दिन दुग्ध संकलित हुआ।
2	रतौना जिला सागर में तरल नत्रजन संयंत्र की स्थापना	निर्माण कार्य पूर्ण	तरल नत्रजन उत्पादन जनवरी 2016 के अंत तक प्रारम्भ होना प्रस्तावित
3.	रतौना जिला सागर में कृषक एवं कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण केन्द्र की	निर्माणाधीन	-

	स्थापना		
4.	मुर्दा नर वत्स संगोपन इकाई की स्थापना(स्तौना जिला सागर, जिला टीकमगढ़ एवं दतिया में)	973	973 संगोपित मुर्दा नर प्रदाय, स्तौना एवं मिनौरा में निर्माण कार्य पूर्ण
5.	दतिया जिले में सीमेन स्टेशन की स्थापना	निविदा प्रकाशित	-
5.	ट्रेविस एवं शेंड की स्थापना (1000ग्राम पंचायतों में)	234 पूर्ण	850पंचायतों हेतु सितम्बर 2016 में राशि प्रदाय की गई है। 766 निर्माणाधीन।

3.7.7 राष्ट्रीय कृषि विकास योजना

तालिका 3.6

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना की विगत तीन वर्षों की वित्तीय स्थिति
(राशि ` करोड़ में)

विवरण	2014-15	2015-16	2016-17
एस.एल.एस.सी द्वारा स्वीकृत	95.59	67.39	114.52
पशुपालन विभाग को विमुक्त राशि	65.09	42.13	61.47
व्यय	65.09	42.13	35.20 (दिस 0 तक)
शेष राशि	0.00	0.00	26.27

राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत वर्ष 2016-17 में किए गए कार्य:

(i) मालीवाया, पचोर, पचामा, सिलवानी, ग्यारसपुर में पांच दुग्धशीत केन्द्रों की स्थापना तथा सुदृढीकरण

इस परियोजना की कुल लागत राशि ` 312 लाख के विरुद्ध राशि ` 312 लाख वर्ष 2016-17 के लिए स्वीकृत है। परियोजनान्तर्गत 5000 लीटर क्षमता के 5 बल्क कूलर मालीवाया, सिलवानी, ग्यारसपुर, पचौर तथा पचामा शीतकेन्द्रों में स्थापना के साथ-साथ हार्डपार्क, पशु आहार गोडाउन तथा शीतकेन्द्रों की बाउन्ड्रीवाल के साथ निर्माण कार्य प्रस्तावित है। परियोजना के माध्यम से शीतकेन्द्रों की संचालन क्षमता में वृद्धि, अनुत्पादक व्ययों में कमी, संचालन हानि में कमी आदि परिलक्षित होंगे। परियोजनान्तर्गत स्वीकृति राशि ` 312 लाख को आहरित किया जाकर क्रियान्वयन एजेंसी मध्यप्रदेश दुग्ध महासंघ मर्यादित भोपाल को प्रथम त्रैमास में उपलब्ध कराया जा चुका है। कार्य प्रगति पर है।

(ii) खण्डवा जिले में दुग्ध पैकेजिंग प्लांट की स्थापना

इस परियोजना की कुल ` 340 लाख की लागत के विरुद्ध वर्ष 2016-17 के लिए ` 340 लाख स्वीकृत है। इस परियोजना के तहत Milk Pasteurizer, Milk Homogenizer, Cream Separator, Raw Milk Chiller, Pasteurized Milk Chiller, Milk Storage Tank, Electric Heated Crate Washer, Skid Mounted Refrigeration, Milk Cold Store, Dump Tank & Dock Automation, Milk Prepack m/c double head, Laboratory Equipment, ETP System, DG Set, Electrification, Furniture & Fixture, Civil Works, Cattle Feed Godown सम्मिलित है। परियोजना से जुड़े लगभग 1600 दुग्ध उत्पादकों को उनके द्वारा प्रदायित दूध के लिए उचित मूल्य के साथ-साथ उनके सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में सुधार परिलक्षित होगा। परियोजना के माध्यम से खण्डवा जिले में लगभग 18,000 लीटर प्रतिदिन पैकड दूध का विक्रय संभावित है। परियोजना अन्तर्गत स्वीकृत राशि ` 340 लाख को आहरित किया जाकर क्रियान्वयन एजेंसी

मध्यप्रदेश दुग्ध महासंघ मर्यादित भोपाल को प्रथम त्रैमास में उपलब्ध कराया जा चुका है। कार्य प्रगति पर है।

(iii) मुलताई में स्थापित दुग्ध शीत केन्द्र का संचालन क्षमता में विस्तार एवं सुदृढीकरण :-

इस परियोजना की कुल लागत राशि ` 115 लाख के विरुद्ध वर्ष 2016-17 के लिए राशि ` 55 लाख स्वीकृत है। परियोजनान्तर्गत 2000 लीटर क्षमता के 4 तथा 1000 लीटर क्षमता के 8 बल्क कूलर (कुल 12 इकाई संबंधित दुग्ध समिति स्तर पर) स्थापित किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त दुग्ध समिति अमले को प्रशिक्षण के साथ-साथ समिति में स्वचलित दुग्ध संकलन इकाई प्रदाय किए जाएंगे। परियोजना के माध्यम से मुलताई शीतकेन्द्र की संचालन क्षमता में वृद्धि, प्रति लीटर दुग्ध संकलन परिवहन लागत में 6 पैसे की कमी, दुग्ध शीतलीकरण व्यय, अनुत्पादक व्ययों तथा संचालन हानि में कमी आदि परिलक्षित होंगे। परियोजना अन्तर्गत स्वीकृत राशि ` 55 लाख को आहरित किया जाकर क्रियान्वयन एजेंसी मध्यप्रदेश दुग्ध महासंघ मर्यादित भोपाल को प्रथम त्रैमास में उपलब्ध कराया जा चुका है। कार्य प्रगति पर है।

(iv) मंदसौर डेयरी डॉक से जुड़े मार्ग पर बल्क मिल्क कूलर की स्थापना

इस परियोजना हेतु वर्ष 2016-17 के लिए राशि ` 235.27 लाख स्वीकृत है। परियोजनान्तर्गत 5000 लीटर क्षमता का 1,200 लीटर क्षमता के 11 तथा 1000 लीटर क्षमता के 22 बल्क कूलर (कुल 34 इकाई मंदसौर डेयरी डॉक से जुड़े मार्ग पर) स्थापित किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त संबंधित दुग्ध समिति अमले को प्रशिक्षण के साथ-साथ समिति में स्वचलित दुग्ध संकलन इकाई प्रदाय किए जाएंगे। 93 दुग्ध समितियों से जुड़े 4151 दुग्ध उत्पादकों के माध्यम से 72331 लीटर प्रतिदिन दुग्ध संकलन संभावित होगा। (अर्थात् वर्तमान से 6000 लीटर प्रतिदिन अधिक दुग्ध संकलन) होगा। परियोजना द्वारा संचालन क्षमता में वृद्धि, प्रति लीटर दुग्ध संकलन परिवहन लागत में 10 पैसे की कमी, दुग्ध शीतलीकरण व्यय, अनुत्पादक व्ययों तथा संचालन हानि में कमी आदि परिलक्षित होंगे। परियोजना अन्तर्गत स्वीकृत राशि ` 235.27 लाख में से कृषि विभाग द्वारा विमुक्त राशि ` 107.81 लाख को आहरित किया जाकर क्रियान्वयन एजेंसी मध्यप्रदेश दुग्ध महासंघ मर्यादित भोपाल को प्रथम त्रैमास में उपलब्ध कराया जा चुका है। कार्य प्रगति पर है।

(v) ग्राम पंचायत स्तर पर पशु चिकित्सा सेवाओं के विस्तार हेतु ट्रेविस एवं शेड की व्यवस्था

पशु उपचार स्थल ऐसी ग्राम पंचायतों में बनाए जा रहे हैं जहां पशु उपचार हेतु पशु चिकित्सा संस्थाएं नहीं हैं तथा पशु उपचार करने हेतु पशु को गिराना पड़ता है जिससे पशु को चोट भी आती है एवं पशु को गिराने के लिए कई व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। इस कठिनाई को दूर करने के उद्देश्य से पशुओं के टीकाकरण, उपचार, कृत्रिम गर्भाधान तथा औषधी देने हेतु पशु उपचार स्थल का निर्माण किया जा रहा है।



उक्त स्थल पर ट्रेविस पशुपालन विभाग द्वारा प्रदाय किए गए हैं। पशु उपचार स्थल का शेड निर्माण एवं नाम पट्टिका तथा निर्देश पट्टिका का निर्माण ग्राम पंचायत द्वारा अथवा संबंधित जिले की ही चयनित निर्माण एजेंसी द्वारा किया जाएगा। वर्ष 2014-15 में 4000 ग्राम पंचायतों में पशु उपचार स्थल की स्थापना हेतु प्रति उपचार स्थल राशि ` 30,000/- शेड के निर्माण हेतु एवं राशि ` 10,000/- ट्रेविस की स्थापना हेतु निर्धारित इकाई लागत अनुसार राशि ` 1600 लाख का प्रस्ताव राज्य स्तरीय मंजूर समिति में अनुमोदन कराया गया था। इस कार्य के लिए कृषि विभाग द्वारा राशि ` 1600 लाख विमुक्त किए गए हैं। उपरोक्तानुसार वित्त वर्ष के चतुर्थ त्रैमास में प्रदेश के 51 जिलों में 4000 ग्राम पंचायत में पशु उपचार स्थल की स्थापना का कार्य प्रगति पर है।

(vi) जिला स्तरीय पशु चिकित्सालय से पालीक्लीनिक में उन्नयन

इस योजना के अन्तर्गत जिला स्तरीय पशु चिकित्सालयों को पॉलीक्लीनिक स्वरूप दिया जा चुका है। वर्तमान में कुल 49 जिलों में सभी दृष्टि से पॉलीक्लीनिक की स्थापना का कार्य पूर्ण किया जा चुका है। (भवन एवं उपकरण)। वित्त वर्ष 2016-17 में शेष बचे हुए एक जिला (भिण्ड) में निर्मित नवीन



पॉलीक्लीनिक के लिए उपकरण तथा पैथोलॉजी लेब की स्थापना के लिए राशि ` 40 लाख राशि का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया है। कार्य प्रगति पर है।

(vii) पशु रोग अन्वेषण प्रयोगशालाओं की स्थापना

यह एक निरन्तर रखी जाने वाली योजना है। योजना के तहत प्रदेश के 29 जिलों (एक अतिरिक्त जिला आगर मालवा) में जहां पर रोग अन्वेषण प्रयोगशाला नहीं है उन जिलों में इन जिलोंमें इन प्रयोगशालाओं की स्थापना किया जाना प्रस्तावित है। योजना के तहत भवन निर्माण हेतु प्रति संस्था राशि राशि ` 1.20 लाख प्रस्तावित किए गए है।



वर्ष 2013-14 में नवीन प्रस्तावित कार्य के तहत शेष 8 जिलों (हरदा, बुरहानपुर, देवास, शाजापुर, अशोकनगर, सिंगरौली, पन्ना एवं मुरैना) में प्रयोगशाला के भवन निर्माण हेतु राशि ` 160 लाख एवं वर्ष 2013-14की पूर्व से स्वीकृत 10 प्रयोगशालाओं में उपकरण, केमीकल-ग्लास वेयर हेतु कुल राशि ` 110 लाख इस प्रकार कुल राशि ` 270 लाख का प्रस्ताव राज्य स्तरीय मंजूरी समिति से अनुमोदन कराया गया था। परियोजना अन्तर्गत स्वीकृत राशि अभी विमुक्त नहीं हुई है।

(viii) पशु रोग बांझ निवारण शिविरों का आयोजन

12वीं पंचवर्षीय योजना के प्रास्पेक्टिव प्लान के अनुसार यह एक निरन्तर रखी जाने वाली योजना है। योजना के तहत प्रदेश के 51 जिलों में प्रति विकासखण्ड 20 बांझ निवारण शिविर एवं तत्पश्चात 21 दिवस बाद उसी ग्राम में 20 अनुगामी शिविरों का आयोजन किया जाकर पशुओं को बांझता निवारण से संबंधित रोगों का उपचार किया जाता है। प्रति शिविर राशि ` 10,000/- आवश्यक औषधि क्रय हेतु तथा राशि ` 2,000/- प्रचार प्रसार हेतु निर्धारित है। वित्त वर्ष 2016-17 में प्रदेश के समस्त 51 जिलों में 9390 बांझ निवारण शिविरों के आयोजन हेतु ` 1126.80 लाख विमुक्त किया जाकर लगभग कुल राशि ` 3.83 लाख पशुओं में बांझपन निवारण कार्य किया गया है। शेष शिविरों का आयोजन भी वित्त वर्ष के शेष माहों में किया जाएगा।

(ix) नवीन स्थापित पशु औषधालयों का सुदृढीकरण

पशुपालन विभाग द्वारा 11वीं पंचवर्षीय योजना में 114 पशुऔषधालयों एवं 12वीं पंचवर्षीय योजना में वर्ष 2016-17 तक 177 पशुओं औषधालयों इस प्रकार कुल 291 पशु औषधालयों की स्थापना की गई है। विभाग द्वारा विभागीय मद से इन सभी 291 नवीन पशु औषधालयों में भवन निर्माण/विस्तार हेतु प्रावधान विभागीय बजट से किया जाकर आवश्यक निर्माण कार्य किए गए हैं। इन पशु औषधालयों में उपकरण एवं औजारों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रति संस्था ` 1.00 लाख का प्रावधान है। नवीन पशु औषधालयों की स्थापना करते समय लागत ` 9.12 लाख है जिसमें उपकरण हेतु मात्र राशि ` 0.25 लाख का प्रावधान होता है । (अधोसंरचना राशि ` 6.60 लाख, फर्नीचर राशि ` . 20 लाख, उपकरण राशि ` 0.25 लाख, औषधि राशि ` 0.15 लाख, वेतन भत्ते राशि ` 1.92 लाख) अतः वर्ष 2016-17 में इन 291 पशु औषधालयों में आवश्यक उपकरणों के प्रदाय हेतु राशि ` 291 लाख नवीन प्रस्ताव राज्य स्तरीय मंजूरी समिति से अनुमोदन कराया गया है कृषि विभाग द्वारा परियोजना की कुल राशि ` 291 लाख विमुक्त की जा चुकी है। कार्यवाही प्रचलन में है।

(x) रीवा में 20,000 लीटर प्रतिदिन क्षमता (विस्तारित) डेयरी संयंत्र की स्थापना

यह परियोजना द्विवर्षीय है तथा इसमें वर्ष 2016-17 में कुल ` 360 लाख एवं वर्ष 2017-18 में ` 350 लाख की आवश्यकता होगी। परियोजना की कुल लागत ` 710 लाख है। वर्तमान में 4,000 लीटर प्रतिदिन क्षमता का रीवा डेयरी संयंत्र म.प्र. खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के तेजा भवन में किराये पर संचालित है जिसकी बैधता मार्च 2016 तक है। यह स्थल शहर के बीच में होने के कारण अनेक पर्यावरण समस्याएँ निर्मित हो रही हैं। जिसके कारण नगर निगम द्वारा अनेक बार वैधानिक कार्यवाही की गई। राज्य शासन द्वारा डेयरी संयंत्र स्थापना हेतु जुलाई अगस्त 2013 में 3.851 हैक्टेयर की भूमि रीवा में आबंटित की गई । परियोजना के तहत 20,000 लीटर प्रतिदिन क्षमता (विस्तारित) का डेयरी संयंत्र स्थापना रीवा में प्रस्तावित है। परियोजना के तहत दुग्ध प्रसंस्करण , घी तथा दूध पाउच फिलिंग रेफ्रिजरेशन इकाई, अवशिष्ट उपचार संयंत्र, पाईप लाईन फिटिंग, विद्युत व्यवस्था तथा नवीन ट्रान्सफार्मर की स्थापना आदि की जाएगी। रीवा संभाग के लगभग 6,200 दुग्ध उत्पादक लाभान्वित होंगे। डेयरी संयंत्र क्षमता में 16000 लीटर प्रतिदिन की वृद्धि, उत्पादकता में वृद्धि, अनेक संचालन व्ययों में कमी के साथ साथ अनुत्पादक व्ययों पर भी अंकुश लगेंगे तथा न्यूनतम अमले द्वारा संचालन संभव होगा। दूध की पैकिंग तथा गुणवत्ता सुनिश्चित की जाएगी तथा विभिन्न स्तर पर संचालन हानि को नियंत्रित किया जा सकेगा।

(xi) भोपाल डेयरी डॉक से जुड़े मार्ग पर बल्क मिल्क कूलर की स्थापना द्वारा दुग्ध मार्ग का केन मुक्तिकरण करना -

यह परियोजना द्विवर्षीय है तथा इसमें वर्ष 2016-17 में ` 400 लाख एवं वर्ष 2017-18 में ` 492 लाख की आवश्यकता होगी। परियोजना का उद्देश्य मिल्क रूट एवं बल्क मिल्क कूलर की स्थापना तथा दूध की गुणवत्ता व कार्य क्षमता में सुधार है। परियोजनान्तर्गत 3,000 लीटर क्षमता के 6 तथा 2000 लीटर क्षमता के 34 बल्क कूलर (कुल 40 इकाई भोपाल डेयरी डॉक से जुड़े मार्ग पर) स्थापित किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त 5000 लीटर क्षमता के 2 रोड मिल्क टैंकर तथा 9,000 लीटर क्षमता के 3 रोड मिल्क टैंकर क्रय कर संचालित किए जाएंगे। 5 दुग्ध संकलन मार्ग पर 182 दुग्ध समितियों से जुड़े 5,100 दुग्ध उत्पादकों के माध्यम से 47,215लीटर प्रतिदिन दूध संकलन संभावित होगा। परियोजना अन्तर्गत समिति स्तरपर कलेक्शन टाईम की सुविधा बढ़ने से दुग्ध संकलन में प्रतिवर्ष 12 से 15 प्रतिशत वृद्धि, अछूते दुग्ध उत्पादकों के जुड़ने से सदस्यता में वृद्धि, प्रति लीटर दूध संकलन परिवहन लागत में 45 पैसे की कमी , दुग्ध शीतलीकरण व्यय में 10 पैसे प्रति लीटर की कमी, दूध में Bacteriological counts की कमी के परिणामस्वरूप दूध एवं दुग्ध उत्पादकता में सुधार, अनुत्पादक व्ययों तथा संचालन हानि में भी कमी संभव होगी।

(xii) बुल मदर फार्म भोपाल में आवासीय किसानों/पशु पालकों के लिए आवासीय प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना एवं सुदृढीकरण -

बुल मदर फार्म पर स्थापित MPLPDC-IGNOU study center पर वर्ष 2013-14 से पशुपालन के 2 पत्राचार पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। (i) 2माह का "अवेयरनेस प्रोग्राम ऑन डेयरी फार्मिंग" (ii) 6माह का "सर्टिफिकेट इन पोल्ट्री फार्मिंग"। अभी तक लक्ष्य अनुसार 100 मुर्गी पालकों को सर्टिफिकेट इन पोल्ट्री फार्मिंग एवं 220 गौसेवकों/पशुपालकों को अवेयरनेस प्रोग्राम ऑन डेयरी फार्मिंग के प्रशिक्षण के प्रमाण-पत्र दिए जा चुके हैं 500 गौसेवकों/पशुपालकों को अवेयरनेस प्रोग्राम ऑन डेयरी फार्मिंग का प्रशिक्षण वर्तमान में दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त उक्त संस्थान में मैत्री को 4 माह कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण भी कराया जाता है। उक्त प्रशिक्षण संस्थान में आवासीय सुविधा उपलब्ध न होने के कारण प्रशिक्षणार्थियों को बाहर ठहराया जाता है जिससे उनके आने-जाने में अत्याधिक समय लगता है एवं कई बार आवासीय व्यवस्था उपलब्ध न होने के कारण प्रशिक्षण स्थगित करना पड़ता है, इसलिए उक्त प्रस्ताव में पशुपालकों को आवासीय सुविधा हेतु छात्रावास बनाया जाना प्रस्तावित है। प्रस्ताव के अनुपालन में 2 वर्षों में 1000 गौसेवकों/पशुपालकों को अवेयरनेस प्रोग्राम ऑन डेयरी फार्मिंग तथा 100 मुर्गीपालकों को पोल्ट्री फार्मिंग का प्रशिक्षण दिया जाना है। योजना के तहत स्वीकृत राशि ` 339 लाख क्रियान्वयन एजेंन्सी मध्यप्रदेश राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम को आहरित की जाकर उपलब्ध कराई जा चुकी है। कार्य प्रगति पर है।

भाग - चार

शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र/भेड़ प्रक्षेत्र/बकरी प्रक्षेत्र एवं कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र

4.1 शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र का उद्देश्य

पशुओं के नस्ल का संरक्षण एवं संवर्धन कर विभिन्न विभागीय योजनाओं के अन्तर्गत हितग्राहियों को उन्नत नस्ल के साण्ड/ पाड़े उपलब्ध करना।

तालिका 4.1

शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्रों की जानकारी

क्र	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र का नाम	प्रक्षेत्रों की संक्षिप्त जानकारी			
		स्थापना वर्ष	उपलब्ध नस्ल	कुल पशुधन	कुल उपलब्ध भूमि (एकड़ में)
1	शास. जर्सी पशु प्रजनन प्रक्षेत्र भदभदा (भोपाल)	वर्ष 1976-77	जर्सी, साहीवाल	376	280
2	शास. पशु प्रजनन प्रक्षेत्र मिनोरा (टीकमगढ़)	वर्ष 1972	हरियाणा	210	350
3	शास. पशु प्रजनन प्रक्षेत्र आगर (शाजापुर)	वर्ष 1942	मालवी	590	1150
4	शास. पशु प्रजनन प्रक्षेत्र रोड़िया (खरगोन)	वर्ष 1979	निमाड़ी	173	103
5	शास. पशु प्रजनन प्रक्षेत्र रतौना (सागर)	वर्ष 1946-47	थारी एवं मुर्दा	486	696
6	शास. पशु प्रजनन प्रक्षेत्र इमलीखेड़ा (छिन्दवाड़ा)	वर्ष 1954-55	साहीवाल	302	112
7	शास. पशु प्रजनन प्रक्षेत्र गढ़ी (बालाघाट)	वर्ष 1917	साहीवाल, संकर जर्सी	380	1080
8	शास. पशु प्रजनन प्रक्षेत्र पवई (पन्ना)	वर्ष 2010	केनकाठ	158	994
9	शासकीय भैंस प्रजनन प्रक्षेत्र शिवपुरी	वर्ष 2008-09	भदावरी	-	शास0 भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र शिवपुरी की भूमि पर स्थापित
10	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र बांसाखेड़ी जिला मंदसौर	वर्ष 2008-09	गिर गाय	-	शास0 भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र बांसाखेड़ी मंदसौर की भूमि पर स्थापित



पशु प्रजनन प्रक्षेत्र भदभदा (भोपाल)

4.2 शासकीय भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र का उद्देश्य

उन्नत नस्ल के मेढे तैयार कर भेड़ विस्तार केन्द्रों के माध्यम से पशुपालकों को प्रदाय कर स्थानीय भेड़ की नस्ल में सुधार लाना।

तालिका 4.2

शासकीय भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्रों की जानकारी

क्र	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र का नाम	प्रक्षेत्रों की संक्षिप्त जानकारी			
		स्थापना वर्ष	उपलब्ध नस्ल	कुल पशुधन	कुल उपलब्ध भूमि (एकड़ में)
1	शास. भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र बांसाखेड़ी (मंदसौर)	वर्ष 1954	मेरीनों कॉरीडेल संकर	42	141
2	शास. भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र पड़ोरा (शिवपुरी)	वर्ष 1975	रेम्बूलेट	121	3500
3	शास. भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र मिनौरा (टीकमगढ़)	वर्ष 1958	रेम्बूलेट एवं कॉरीडेल	294	355

4.3 शासकीय बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र का उद्देश्य

जमनापारी नस्ल की बकरियों का संरक्षण एवं संवर्धन कर विभिन्न विभागीय योजनाओं के अन्तर्गत हितग्राहियों/ पशुपालकों को उपलब्ध कराना।

तालिका 4.3

शासकीय बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र की जानकारी

क्र	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र का नाम	प्रक्षेत्रों की संक्षिप्त जानकारी			
		स्थापना वर्ष	उपलब्ध नस्ल	कुल पशुधन	कुल उपलब्ध भूमि (एकड़ में)
1	शास. बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र आरोन (ग्वालियर)	वर्ष 1980	जमनापारी	451	312
2	शास. बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र मिनौरा (टीकमगढ़)	वर्ष 2013	जमनापारी	942	पशु प्रजनन प्रक्षेत्र मिनौरा की भूमि पर स्थापित
3	शास. बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र ठीकरी (बड़वानी)	वर्ष 2008-09	जमनापारी	-	129

4.4 शासकीय कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र का उद्देश्य

कुक्कुट पालन प्रक्षेत्रों पर लो इनपुट टेक्नोलॉजी वाले पक्षियों का संवर्धन कर विभिन्न विभागीय योजनाओं में प्रदाय करने हेतु एक दिवसीय चूजों का उत्पादन करना प्रक्षेत्र का उद्देश्य है साथ ही कड़कनाथ कुक्कुट प्रक्षेत्र झाबुआ में मध्य प्रदेश का गौरव कहलाने वाले कड़कनाथ नस्ल के पक्षियों का संरक्षण एवं संवर्धन करने के साथ-साथ विभागीय कड़कनाथ प्रदाय योजना अन्तर्गत चूजा प्रदाय करने हेतु एक दिवसीय चूजों का उत्पादन करना मुख्य उद्देश्य है।



तालिका 4.4

शासकीय कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र की जानकारी

क्र	शासकीय कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र का नाम	प्रक्षेत्रों की संक्षिप्त जानकारी वर्ष 2016-17			
		स्थापना वर्ष	उपलब्ध नस्ल	कुल उपलब्ध मादा पेरेन्ट पक्षी (दिसम्बर तक)	कुल उपलब्ध भूमि (एकड़ में)
1	शास. कुक्कुट प्रक्षेत्र अनुसंधान हताईखेड़ा, भोपाल	वर्ष 1968-69	गिरीराजा चाब्रो कड़कनाथ जापानी बटेर आर.आई.आर.	979 863 3297 1200 4589	11
2	शास. कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र इन्दौर	वर्ष 1963-64	आर0आई0आर0	2310	13
3	शास. कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र ग्वालियर	वर्ष 1986-87	कड़कनाथ	2037	3
4	शास. कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र गुना	वर्ष 1988-89	चाब्रो	2600	7
5	शास. कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र सागर	वर्ष 1986-87	कलिंगा ब्राउन	2015	10
6	शास. कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र रीवा	वर्ष 1964-65	कलिंगा ब्राउन	1440	5
7	शास. कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र छिन्दवाड़ा	वर्ष 1965-66	रेन्बो रुस्टर कड़कनाथ	2200 505	12
8	शास. कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र शहडोल	वर्ष 1960-61	कलिंगा ब्राउन	3000	6
9	शास. कड़कनाथ कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र झाबुआ	वर्ष 1978-79	कड़कनाथ	2350	6
कुल				23682	74

भाग-5
सामान्य प्रशासनिक जानकारी
तालिका 5.1
विभाग में स्वीकृत एवं कार्यरत पदों की संख्या
(माह दिसम्बर 2016 की स्थिति में)

क्रमांक	श्रेणी/पदनाम	स्वीकृत	कार्यरत
1	संचालक	1	1
2	अपर संचालक	2	-
3	संयुक्त संचालक	21	10
4	उप संचालक/सिविल सर्जन पशु चिकित्सा/पशु प्रजनन कार्यक्रम अधिकारी	203	108
5	उप संचालक(रिसर्च)	1	-
6	सहायक संचालक /पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञ/ पशु चिकित्सा विस्तार अधिकारी	1671	1044
7	सहायक संचालक सॉख्यकीय/सांख्यकीय अधिकारी	17	8
8	क्षेत्रीय अधिकारी (सॉख्यकीय)	1	-
9	सहायक पंजीयक सहकारी संस्थाएं	4	0
10	प्रशासनिक अधिकारी/लेखा परीक्षा अधिकारी/ लेखा अधिकारी	3	1
11	जन संचार दृश्य श्रव्य अधि०	1	-
12	खाद्य विश्लेषक	1	-
13	उप यंत्री	3	3
14	मुख्य मानचित्रकार	1	1
15	सहायक सॉख्यकीय अधिकारी	48	29
16	विपणन निरीक्षक	5	1
17	सहा०पशु चिकि० क्षेत्र अधि०, प०चि०क्षेत्र अधि०, वरिष्ठ प०चि०क्षेत्र अधि०, पशुधन क्षेत्र अधि०	5795	3769
18	प्रगति सहायक/संगणक	110	80
19	प्रगणक	72	45
20	प्रयोगशाला सहायक/तकनीशियन	132	40
21	क्षेत्र सहायक	40	24
22	सीनियर प्लांट आपरेटर	3	0
23	प्लांट आपरेटर	11	8
24	दुग्ध अभिलेखक	17	8
25	प्रोजेक्ट आपरेटर	18	18
26	प्रोजेक्ट आपरेटर कनिष्ठ	5	5
27	विद्युतकार मैकेनिक	7	5
28	पट्टी बंधक वर्ग-1	15	10
29	लिपिक वर्गीय	849	632
30	वाहन चालक	167	109
31	चतुर्थ श्रेणी	2919	2722

तालिका 5.2

विभागीय नियुक्तियां एवं पदोन्नतियां (माह दिसम्बर 2016 की स्थिति में)

क्रमांक	पद श्रेणी	नियुक्तियाँ	पदोन्नतियाँ
1	प्रथम श्रेणी	-	-
2	द्वितीय श्रेणी	-	-
3	तृतीय श्रेणी	425	51

तालिका 5.3

विभागीय जाँच सम्बन्धी जानकारी (माह दिसम्बर 2016 की स्थिति में)

क्र०	श्रेणी	जाँच प्रकरणों की संख्या	निराकृत जाँच प्रकरण	लंबित जाँच प्रकरण
1	प्रथम श्रेणी	10	-	10
2	द्वितीय श्रेणी	25	3	22
3	तृतीय श्रेणी	13	2	11
4	चतुर्थ श्रेणी	-	-	-

तालिका 5.4

विभाग के विरुद्ध दायर न्यायालयीन प्रकरणों की स्थिति
(माह दिसम्बर 2016 की स्थिति में)

क्र०	पद श्रेणी	माननीय न्यायालय द्वारा निर्णित/खारिज	निराकृत	पालन हेतु शेष	माननीय न्यायालय में कुल विचाराधीन प्रकरण
1	प्रथम श्रेणी	-	-	01	01
2	द्वितीय श्रेणी	01	03	03	06
3	तृतीय श्रेणी	04	16	02	09
4	चतुर्थ श्रेणी	-	38	23	08
	योग	05	57	29	24

तालिका 5.5

स्थानान्तरण
विभाग द्वारा किये गये स्थानांतरणों की जानकारी
(माह दिसम्बर 2016 की स्थिति में)

क्रमांक	श्रेणी/ पदनाम	स्थानांतरण की संख्या	संशोधन संख्या	निरस्त की संख्या
(प्रथम श्रेणी)				
1	संयुक्त संचालक	2	-	-
2	उप संचालक	7	-	-
(द्वितीय श्रेणी)				
1	पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञ	25	-	-
2	सहायक संचालक सांख्यिकीय	-	-	-
(तृतीय श्रेणी)				
1	सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी	29	-	-
2	लिपिक वर्गीय	1	-	-

भाग-छः

विभागीय उपलब्धियां

6.1 महत्वपूर्ण विभागीय उपलब्धियाँ

- वर्ष 2015-16 में प्रदेश की दुग्ध उत्पादन की वृद्धि दर 12.70 प्रतिशत रही जबकि राष्ट्र की दुग्ध उत्पादन की वृद्धि दर 6.27 प्रतिशत थी।
- वर्ष 2015-16 में प्रदेश, दुग्धोत्पादन में राष्ट्र में चौथे स्थान पर है।
- वर्ष 2015-16 में दुग्ध उत्पादन 10779 हजार मेट्रिक टन से बढ़कर 12148 हजार मेट्रिक टन हुआ है। वर्ष 2015-16 में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन दुग्ध उपलब्धता 386 ग्राम से बढ़कर 428 ग्राम हो गई है जो कि राष्ट्रीय औसत 337 ग्राम से अधिक है।
- वर्ष 2015-16 में अण्डा उत्पादन 11776 लाख से बढ़कर 14414 लाख हुआ है। वर्ष 2015-16 में प्रति व्यक्ति वार्षिक अण्डा उपलब्धता 15 अण्डा से बढ़कर 19 अण्डा वार्षिक हो गया है।
- वर्ष 2015-16 में 10.29 लाख किलोग्राम प्रतिदिन औसत दुग्ध संकलित किया गया तथा दुग्ध उत्पादकों को राशि `1057.16 करोड़ का भुगतान किया गया।
- वर्ष 2015-16 में 8.51 लाख लीटर प्रतिदिन औसत दुग्ध विक्रय किया गया।
- वर्ष 2015-16 के दौरान दुग्ध संघों का सेल्स टर्न ओवर लगभग 1740 करोड़ है जो गत वर्ष की तुलना में लगभग 8 प्रतिशत अधिक है।
- 15 जुलाई 2015 से प्रदेश के 85,933 प्राथमिक विद्यालयों के 45.85 लाख विद्यार्थी तथा 92,330 आंगनवाड़ियों के 27.88 लाख बच्चों को मध्याह्न भोजन कार्यक्रम अंतर्गत सप्ताह में 3 दिन मीठा सुगंधित दूध दिए जाने की योजना प्रारंभ की गई है।
- वर्ष 2015-16 में प्रदेश के दुग्ध उत्पाद विक्रय में घी में 18%,मीठे दूध में 23%,मीठे दही में 23%,सादे दही में 55%,पेड़े में 19%,छेना-खीर में 84%,पनीर में 8%,मट्ठे में 8%,तथा गुलाब जामुन में 6%,की वृद्धि हुई है।
- उज्जैन तथा भोपाल दुग्ध संघ द्वारा हरियाणा राज्य सहकारी डेयरी फेडरेशन को 600में.टन.श्वेत मक्खन प्रदाय किया गया।
- इन्दौर दुग्ध संघ द्वारा भारतीय सेना को 409.99में.टन. होल मिल्क पाउडर प्रदाय किया गया तथा 87.80 में.टन.घी प्रदाय किया गया। इसी प्रकार संघ द्वारा भारत तिब्बत सीमा पुलिस को 41.83में.टन.होल मिल्क पाउडर तथा 17.11में.टन. घी प्रदाय किया गया।
- 3030 दुग्ध सहकारी समितियों द्वारा बैंको के माध्यम से भुगतान की सुविधा प्रारम्भ कर दी गई है। शेष समितियों में भी आंशिक रूप से बैंको के माध्यम से भुगतान किया जा रहा है।
- नगद रहित व्यवहारों को प्रोत्साहन देने के लिए दुग्ध प्रदायक सदस्यों के बैंक खाते खुलवाए जा रहे हैं। वर्तमान में 164084 सदस्यों के खाते खुलवाए जा चुके हैं।

- दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करने हेतु उन्नत नस्ल के नर एवं मादा उत्पादित करने के लिए भ्रूण प्रत्यारोपण जैसी नवीन तकनीक का प्रयोग प्रारम्भ किया गया है। जलवायु परिवर्तन को दृष्टिगत रखते हुए प्रदेश की देशी मालवी नस्ल के साथ ही देश की अन्य दुधारु नस्लों जैसे गिर एवं साहीवाल के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु इस तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। प्रयोगशाला पर वर्ष 2016-17 में माह दिसम्बर तक 163 भ्रूण संकलित किए गए तथा 129 भ्रूण प्रत्यारोपित किए गए।
- केन्द्रीय वीर्य संस्थान भदभदा भोपाल पर वर्ष 2016-17 में माह दिसम्बर तक 20.06 लाख फ़ोजेन सीमेन डोजेज का उत्पादन किया गया।

6.2 गोकुल महोत्सव

- 6.2.1 पशुपालन को अधिक लाभप्रद बनाने एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालकों को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु प्रदेश में दिनांक 31.10.2016 से दिनांक 30.11.2016 तक गोकुल महोत्सव का आयोजन किया गया।
- 6.2.2 गोकुल महोत्सव के अन्तर्गत प्रदेश के जिलों में ग्राम स्तर पर विभागीय पशु चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया।
- 6.2.3 गोकुल महोत्सव के उद्देश्य
 - (i) पशुपालकों के पशुओं को उनके क्षेत्र में पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना।
 - (ii) पशुओं की विभिन्न बीमारियों के बचाव हेतु पशुओं में प्रतिबंधात्मक टीकाकरण करना
 - (iii) नस्ल सुधार के उद्देश्य से ग्राम के निकृष्ट सांडों का बधियाकरण करना।
 - (iv) गाय भैंसों में बांझपन के निवारण हेतु उपचार करना।
 - (v) ग्राम के पशुओं को कृमिनाशक औषधियां देकर कृमि से होने वाले नुकसान से बचाव करना।
 - (vi) पशुपालकों को विभागीय गतिविधियों /हितग्राहीमूलक योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना
 - (vii) कृत्रिम गर्भाधान कार्य, पशु बीमा कार्य।
 - (viii) पशुपालकों का उन्नत पशुपालन /पशु प्रबंधन की जानकारी देना।
 - (ix) स्टाल फीडिंग का महत्व समझाना। पशुपालकों को उन्नत चारा, उसका प्रबंधन एवं उत्पादन के संबंध में जानकारी प्रदान करना।
 - (x) गोबर खाद, नाडेप की उपयोगिता के संबंध में जानकारी देना।
 - (xi) ग्रीष्म ऋतु में चारे की अल्पता से निपटने के लिए चारा संरक्षण हेतु हे एवं साईलेज बनाने की विधियों पर जानकारी प्रदान करना।
 - (xii) पशु को पोषिक आहार देने हेतु चारे /भूसा के यूरिया उपचार की जानकारी प्रदान करना।
 - (xiii) अधिकतम उत्पादन एवं पशु के स्वास्थ्य के लिए संतुलित पशु आहार की जानकारी उपलब्ध कराना।

6.2.4 गोकुल महोत्सव के अन्तर्गत उपलब्धियां

(i)	जिलों के ग्रामों में लगाए गए पशु चिकित्सा शिविरों की संख्या-	47579
(ii)	कुल पंजीकृत पशुपालक-	1696517
(iii)	कुल पंजीकृत पशु संख्या-	9115354
(iv)	पशु उपचार कार्य-	1685936
(v)	टीकाकरण कार्य-	5061145
(vi)	बधियाकरण कार्य-	158043
(vii)	कृत्रिम गर्भाधान कार्य-	29914
(viii)	बांझपन उपचार कार्य-	291010
(ix)	गर्भपरीक्षण कार्य-	166288
(x)	पशुबीमा कार्य-	6164
(xi)	शल्यचिकित्सा कार्य-	17464
(xii)	औषधि वितरण कार्य-	5060418
(xiii)	विभागीय योजनाओं के प्रचार-प्रसार का कार्य-	पम्पलेट्स/ब्रोशर के वितरण एवं पोस्टर प्रदर्शन के माध्यम से किया गया।



राज्य स्तरीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान भोपाल में दिनांक 17 दिसम्बर 2016 को विभागीय अधिकारियों, कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ताओं, मैत्री को संबोधित करते हुए श्री देवेन्द्र चौधरी जी सचिव, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्यपालन विभाग नई दिल्ली एवं श्री अश्विनी कुमार राय, प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, पशुपालन विभाग

भाग-सात

विभाग के अंतर्गत आने वाले निगम, बोर्ड एवं समितियाँ

7.1 म. प्र. राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम

म. प्र. राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम की स्थापना अधिनियम 37 (1982) के अन्तर्गत 19 नवम्बर 1982 को निगम के कामकाज, पशु उत्पादन(दूध तथा दुग्ध उत्पादों को छोड़कर) तथा कुक्कुट उत्पादों के संग्रहण, पालन पोषण और विपणन करने एवं पशु तथा कुक्कुट का संरक्षण, प्रबंध और विकास करने के उद्देश्य से हुई जिससे कि राज्य के पशुधन का विकास हो सके और उसमें वृद्धि हो सके।

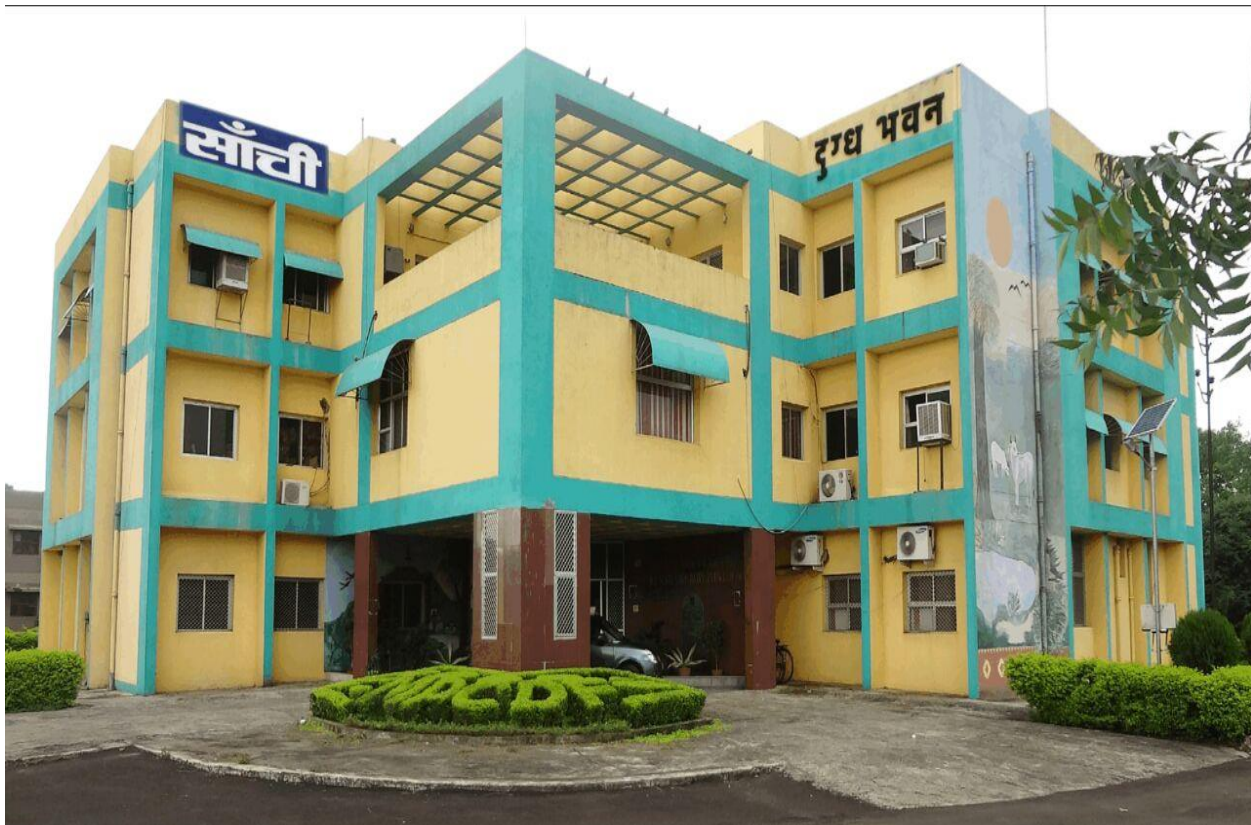
तालिका 7.1

मध्यप्रदेश राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम द्वारा क्रियान्वित प्रमुख योजनाओं की उपलब्धि

क्र.	विवरण	भौतिक एवं वित्तीय उपलब्धि					
		2014-2015		2015-2016		2016-2017 (दिसतक)	
		भौतिक	वित्तीय (लाख ` में)	भौतिक	वित्तीय (लाख ` में)	भौतिक	वित्तीय (लाख ` में)
1.	उच्चवंशीय पशुधन का प्रदाय(बैल जोड़ी भी सम्मिलित)	5785	1743.32	1448	532.40	417	151.99
2.	नस्लसुधार (गौवंश/ भैंसवंश/ बकरा/सूकर)	8050	716.01	15095	1194.74	8864	939.40
3.	पशु आहार का उत्पादन(मै.टन में) (गौ-भैंसवंश/बकरा एवं पक्षी)	613.30	143.60	359.80	73.98	119.67	28.41
4.	तरल नत्रजन का विक्रय(लाख लीटर में)	7.96	306.43	9.02	332.33	8.09	209.64
5.	फ़ोजन सीमन का उत्पादन (लाख स्ट्र)	18.34	293.44	18.62	297.92	20.06	320.96
6.	राष्ट्रीय गौ भैंसवंशीय परियोजना, पशु प्रजनन प्रक्षेत्र रतौना,मिनौरा, कीरतपुर, एवं बुलमदर फार्म भदभदा भोपाल	मैत्री 500 प्रशिक्षण एवं उपकरण आदि मुर्ग सांड 250 कृग सांड 60 एवं फर्टिलिटी कैप 100	2165.00	मैत्री 500 प्रशिक्षण एवं उपकरण, 1.5 ली. 400 नग, 3 ली. क्षमता के 700 नग 35 ली. क्षमता के 175 नग तरल नत्रजन पात्रों का प्रदाय	2052.70	मैत्री 128 प्रशिक्षण एवं उपकरण आदि का प्रदाय, कृ. ग.सांड क्रय 60, रिपलेसमेंट कृ. ग. उपकरण अन्तर्गत 624 नग कृ.ग.किट का प्रदाय, 1. 5 ली. 400 नग, 3 ली. क्षमता के 700 नग 35 ली. क्षमता के 175 नग तरल नत्रजन पात्रों का प्रदाय	371.07

7.	बुन्देलखण्ड पैकेज	मुर्दा 1400	560.00	-	-	-	-
8.	रिस्क मैनेजमेंट एन्ड इंश्योरेन्स (पशुधन बीमायोजना)	11168	1124.36	37486	259.51	25986	153.30
9.	कीरतपुर में मुर्दा प्रजनन केन्द्र की स्थापना	-	-	-	-	114 वत्स उत्पादित	-
10	मुर्दा नर संगोपन (रतौना, कीरतपुर, मिनौरा, बुल मदर फार्म भदभदा भोपाल)	-	-	-	-	-	-
11	भूण प्रत्यारोपण प्रयोगशाला	146 भूण संकलित एव 93 का प्रत्यारोपण	473	134 भूण संकलित किए एवं 90 प्रत्यारोपड़, 54 हिमकृत किए 11 वत्सों का उत्पादन	235.00	163 भूण संकलित किए एवं 129 प्रत्यारोपड़, 34 हिमकृत किए 24 वत्सों का उत्पादन	50.41
12	राज्य पशु प्रजनन केंद्र	-	150.00	-	150.00	बायो सिक्युरिटी बाऊड्रीवाल, रोड वर्षा जल संरक्षण हेतु तालाब, भूमि का समतलीकरण, सिंचाई व्यवस्था	121.50
13	नेशनल कामधेनु ब्रीडिंग सेन्टर की स्थापना					लागत राशि ' 25 करोड	
14	दतिया में सीमन स्टेशन की स्थापना					लागत राशि ' 10 करोड	
15	कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण संस्थान रतौना (सागर)					लागत राशि ' 5 करोड	
16	टर्न ओवर	-	7615.16	-	5128.58		2346.68

7.2 एम. पी. स्टेट कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड



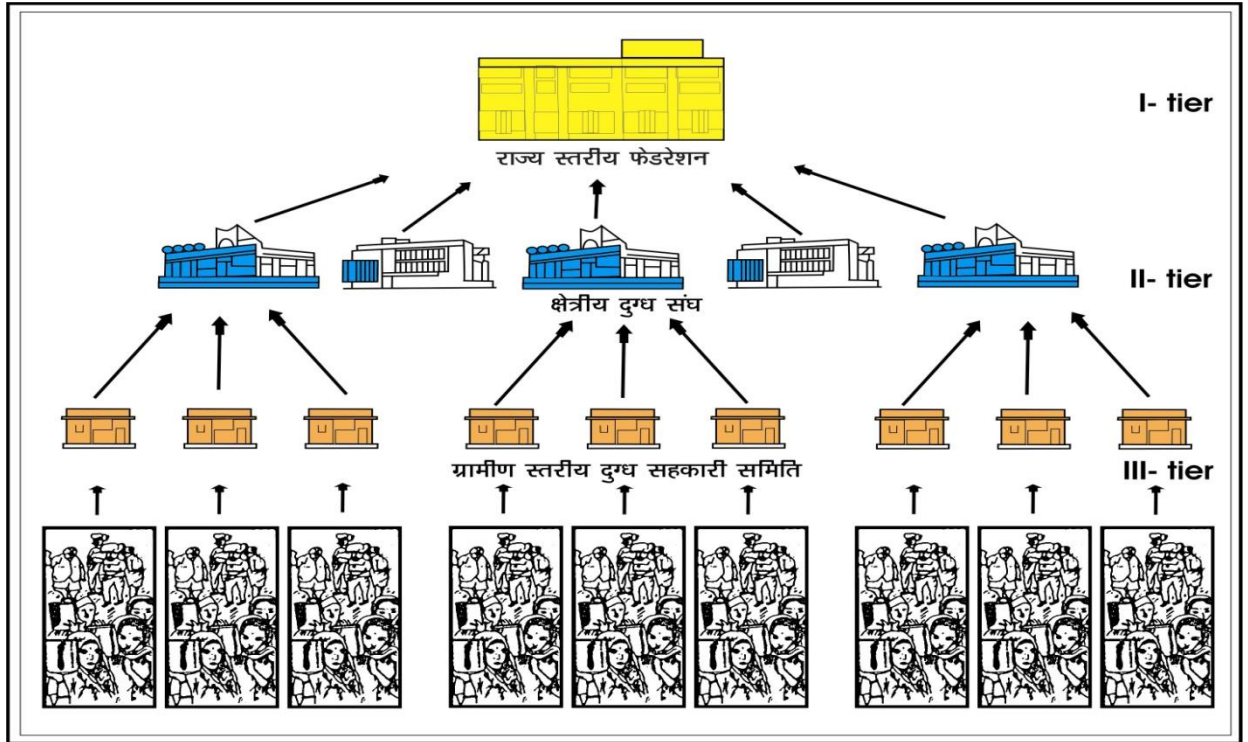
मध्यप्रदेश में सहकारिता क्षेत्र अन्तर्गत समन्वित डेयरी विकास की गतिविधियां सर्वप्रथम प्रदेश के पश्चिमी एवं मध्य क्षेत्र के 9 जिलों में वर्ष 1975 में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के माध्यम से इन्टरनेशनल डेवलपमेंट एजेन्सी (IDA) से प्राप्त वित्त पोषण से प्रारम्भ की गई तथा मध्यप्रदेश स्टेट डेयरी डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन का गठन किया गया।

वर्ष 1980-81 में प्रदेश में आपरेशन फ्लड-11 कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया जिसके तहत चार दुग्ध संघों ग्वालियर, जबलपुर, रायपुर एवं सागर के दुग्धांचलों के अन्तर्गत 29 और जिलों में डेयरी विकास की गतिविधियां प्रारम्भ की गई।

वर्ष 1980 में ही आपरेशन फ्लड कार्यक्रम का राज्य स्तर पर संचालन करने के लिए मध्यप्रदेश दुग्ध महासंघ सहकारी मर्यादित (वर्तमान में एम.पी.स्टेट कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लि.) की स्थापना की गई।

7.2.1 त्रिस्तरीय संरचना

- ◆ एमपीसीडीएफ एवं दुग्ध संघों के अंतर्गत कार्यरत त्रिस्तरीय संरचना का संचालन प्रदेश के 51 जिलों में किया जा रहा है ।



तालिका 7.2

सहकारी डेयरी विकास कार्यक्रम की भौतिक एवं वित्तीय उपलब्धि

क्र.	विवरण	2014-15	2015-16	2016-17 (दिस0तक)
1	कार्यशील दुग्ध सहकारी समितियों की संख्या	6300	6315	6578
2	कार्यशील दुग्ध सहकारी समितियों की सदस्य संख्या	237013	248717	256787
3	दुग्ध संकलन किलोग्राम/प्रतिदिन	1101610	1029138	864638
4	स्थानीय दुग्ध विक्रय (लीटर प्रतिदिन)	712385	703452	729813
5	पशु आहार विक्रय (मेट्रिक टन)	115482	116714	84516
6	कृत्रिम गर्भाधान (संख्या)	405698	508362	413895
7	दुग्ध उत्पादकों को भुगतान (करोड़ में)	1243.66	1057.16	667.76
8	विक्रय प्राप्तियां (करोड़ में)	1606.84	1739.51	1312.76
9	लाभ/हानि ऋण अदायगी के पूर्व (लाख में)	2882.38	7517.19	10136.81
10	लाभ/हानि ऋण अदायगी के	2266.77	6958.19	9387.80

पश्चात	(लाख में)			
--------	-------------	--	--	--

दुग्ध संघों का कार्यक्षेत्र

दुग्ध संघवार जिलों का वर्गीकरण निम्नानुसार है :

क्र.	दुग्ध संघ का नाम	कुल जिले	सम्मिलित जिले का नाम
1	भोपाल	12	भोपाल, सीहोर, विदिशा, राजगढ़, रायसेन, गुना, होशंगाबाद, बैतूल, हरदा, अशोकनगर, सागर, छतरपुर, देवास, (कन्नौद, खातेगांव) एवं जिला शाजापुर (शुजालपुर, कालापपीपल) का कुछ क्षेत्र
2	इन्दौर	09	इन्दौर, देवास, खरगौन, धार, बडवानी, झाबुआ, अलीराजपुर, खण्डवा एवं बुरहानपुर
3	उज्जैन	06	उज्जैन, रतलाम, मंदसौर, नीमच, शाजापुर, आगर एवं जिला धार (बदनावर) व देवास का कुछ क्षेत्र
4	जबलपुर	17	जबलपुर, सिवनी, नरसिंहपुर, रीवा, सतना, मण्डला, डिंडोरी, कटनी, छिंदवाडा, शहडोल, उमरिया, अनुपपुर, सीधी, पन्ना, दमोह, सिंगरौली, बालाघाट
5	ग्वालियर	07	ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना, शिवपुरी, श्योपुर, दतिया एवं टीकमगढ़
कुल जिले		51	

7.2.2 राष्ट्रीय डेयरी विकास परियोजना

इस योजना का उद्देश्य दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, पोषक आहार की गुणवत्ता में सुधार, रोजगार निर्मित करना व ग्रामीण क्षेत्रों में आय बढ़ाने के अवसर प्रदान करना है। भारत शासन द्वारा सघन डेयरी विकास कार्यक्रम के स्थान पर यह योजना प्रारम्भ की गई है। वर्तमान में यह योजना खरगौन जिले में चलाई जा रही है।

भारत शासन द्वारा योजना अन्तर्गत खरगौन जिले हेतु वर्ष 2015-16 तथा 2016-17 के लिए राशि ` 758.86 लाख की लागत की द्विवर्षीय योजना स्वीकृत की गई थी। इसमें से राशि ` 583.13 लाख केन्द्र शासन तथा राशि ` 175.73 लाख क्रियान्वयन एजेन्सी का हिस्सा है। परियोजनान्तर्गत प्रथम वर्ष हेतु स्वीकृत राशि में से राशि ` 304.74 लाख केन्द्र सरकार से प्राप्त हुई है। राष्ट्रीय डेयरी विकास परियोजना खरगौन जिले की भौतिक उपलब्धियां निम्नानुसार है:

विवरण	2015-16	2016-17 (दिस0 तक)
कार्यरत दुग्ध सहकारी समितियों की संख्या	177	198
दुग्ध उत्पादकों की संख्या	6465	7234

औसत दुग्ध संकलन (कि.ग्रा. प्रतिदिन)	24054	22362
औसत स्थानीय दुग्ध विक्रय (लीटर/दिन)	19655	18267

7.3 मध्यप्रदेश गौपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड

7.3.1 बोर्ड की संरचना

मध्यप्रदेश शासन पशुपालन विभाग द्वारा मध्यप्रदेश गौपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड को दिनांक 08-10-2004 से राज्य में प्रभावशील घोषित किया गया है। बोर्ड के कृत्यों के संचालन हेतु राज्य स्तर पर एक कार्यपरिषद तथा जिला स्तर पर जिला गौपालन एवं पशुधन संवर्धन समितियों का गठन किया गया है। राज्य गौपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड के अध्यक्ष माननीय मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन, उपाध्यक्ष माननीय मंत्री पशुपालन, सदस्य कृषि उत्पादन आयुक्त, प्रमुख सचिव गृह, प्रमुख सचिव वन, प्रमुख सचिव ग्रामीण विकास, प्रमुख सचिव नगरीय प्रशासन विकास, प्रमुख सचिव पशुपालन, संचालक पशुपालन, प्रबन्ध संचालक ऊर्जा विकास निगम, संचालक कृषि, प्रबन्ध संचालक मध्यप्रदेश गौपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड, प्रबन्ध संचालक राज्य कृषि कल्याण विपणन बोर्ड हैं। राज्य सरकार द्वारा मनोनीत सदस्य निम्नानुसार होते हैं:

- (अ) राज्य शासन द्वारा नामांकित एक अशासकीय व्यक्ति जो बोर्ड का "दूसरा" उपाध्यक्ष होगा।
- (ब) गौपालन एवं पशुधन संवर्धन में रुचि रखने वाले 7 अशासकीय सदस्य जिसमें कम से कम दो पंजीकृत गौशाला के संचालक होना अनिवार्य है।

7.3.2 जिला गौपालन एवं पशुधन संवर्धन समिति

जिला गौपालन एवं पशुधन संवर्धन समिति, अध्यक्ष और निम्नलिखित सदस्यों से मिलकर बनेगा, अर्थात्- कलेक्टर अध्यक्ष, पुलिस अधीक्षक सदस्य, उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवाएं पदेन सचिव, उप संचालक कृषि कल्याण सदस्य, प्रबंधक, मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम सदस्य, आयुक्त, नगर निगम/ मुख्य नगर पालिका अधिकारी सदस्य, जिला पंचायत के कृषि समिति का अध्यक्ष सदस्य, सचिव, कृषि उपज मंडी (जिला मुख्यालय का) सदस्य, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सदस्य है। अशासकीय सदस्य निम्नानुसार होते हैं:

- (अ) चार अशासकीय सदस्य, जिसमें से दो का नामांकन राज्य गौपालन एवम् पशुधन संवर्धन बोर्ड द्वारा एवम् दो का नामांकन जिले के प्रभारी मंत्री द्वारा किया जाएगा। इसके अतिरिक्त जिले के विधायकों में से एक विधायक प्रभारी मंत्री द्वारा मनोनीत किया जाएगा। जिले के विधायकों का कार्यकाल बारी-बारी से एक वर्ष का होगा।
- (ब) अशासकीय सदस्यों में से एक सदस्य उपाध्यक्ष होगा, जिसका मनोनयन राज्य बोर्ड द्वारा किया जाएगा।
- (स) संयुक्त/उप संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं, जिला गौपालन एवं पशुधन संवर्धन समिति का पदेन सचिव होगा।

7.3.3 नवीन गौशालाओं का पंजीयन एवं निरस्तीकरण

गौशालाओं के नवीन पंजीयन हेतु आवेदन जिला गौपालन एवं पशुधन संवर्धन समिति के माध्यम से प्राप्त होने पर बोर्ड के सदस्यों तथा पशुपालन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के भौतिक सत्यापन पश्चात् मापदंड अनुरूप पाए जाने पर पंजीयन की कार्यवाही की जाती है। बोर्ड द्वारा 26 गौशालाओं के नवीन पंजीयन किए गए तथा 20 गौशालाओं के पंजीयन निरस्त किए गए।

7.3.4 कामधेनू गौ-अभ्यारण्य, सुसनेर

कामधेनू गौ-अभ्यारण्य, सुसनेर की स्थापना ग्राम सालरिया, तहसील सुसनेर जिला आगरा में की गई है। इसकी कुल भूमि का रकबा 472.63 हैक्टेयर है। इस अभ्यारण्य में प्रमुख रूप से निःशक्त, अशक्त भारतीय गौवंश के संरक्षण हेतु “गौ-अभ्यारण्य अनुसंधान एवं उत्पादन केन्द्र” के रूप में एक ऐसा मॉडल तैयार किया गया है जिससे दूध न देने वाले गौवंश को भी जैविक खाद एवं गौमूत्र औषधियों के निर्माण के माध्यम से उपयोगी बनाया जा सके। अभ्यारण्य में गौवंश द्वारा उत्पादित विभिन्न उत्पादों, अपरंपरागत उर्जा स्रोतों, चारागाह विकास एवं ग्रामीण परिवहन का एक मॉडल तैयार किया जाएगा। इस गौ-अभ्यारण्य, अनुसंधान एवं उत्पादन केन्द्र हेतु राशि `31.95 करोड़ की पंचवर्षीय परियोजना स्वीकृत की गई है।

परियोजना अन्तर्गत दोनों चरण क्रमशः प्रथम गौ-अभ्यारण्य द्वितीय अनुसंधान व उत्पादन केन्द्र का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। परियोजना के संचालन के लिए उप संचालक, पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञों एवं सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारियों की नियुक्ति कर दी गई है। साथ ही 5 हजार गौवंश के पालन हेतु 24 शेड निर्माण, 10 चारा गोदाम, विद्युत व्यवस्था के साथ ही अधिकारी कर्मचारियों हेतु 17 आवास के निर्माण का कार्य भी पूर्ण किया गया है तथा गौपालन, पंचगव्य, जैविक खाद निर्माण, चारागाह विकास विषयों पर प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षणार्थियों के लिए एक पृथक प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण पूर्ण किया गया है।

7.3.5 गौवंश वध प्रतिषेध अधिनियम 2004 में संशोधन

- गौवंश वध पर पूर्ण प्रतिबंध
- गौवंश वध अथवा गौवंश अवैध परिवहन कि मामले में अपराध सिद्ध होने पर अधिकतम कारावास का सीमा बढ़ाकर 7वर्ष की गई है।
- अधिनियम के तहद् पकड़े जाने पर सबूत का भार अभियुक्त पर होगा।
- गौवंश अवैध परिवहन के मामले में उपयोग किए गए वाहन को जप्त किया जा सकता है।

तालिका 7.3
प्रदेश स्तर पर गौशालाओं की स्थिति

क्रमांक	विवरण	संख्या
1	कुल पंजीकृत गौशालाएं	1 2 4 5
2	कुल क्रियाशील गौशाला	5 9 5
3	कुल अक्रियाशील गौशालाएं	6 0 7
4	गौशालाओं में स्थापित बायोगैस संयंत्र	7 6
5	गौशालाओ की संख्या जहां गोमूत्र से औषधियां तैयार की जा रही है	3 1
6	गौशालाओ की संख्या जहां गोबर खाद, जैविक खेती हेतु तैयार की जा रही है	2 8 3
7	गौशालाओं में उपलब्ध गौवंश	1 3 5 5 3 1



तालिका 7.4
गौशालाओं को वर्षवार दी गई आर्थिक सहायता का विवरण

सं.क्रं.	वर्ष	प्राप्त वंटन (` करोड़ में)	प्रदाय राशि (` करोड़ में)
1	2015-16	15.00	15.00
2	2016-17	20.00	20.00

7.4 पशु रोगी कल्याण समिति

राज्य के सभी जिलों में पशु कल्याण समितियों का गठन निम्नांकित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है:-

- (i) क्षेत्र के पशुओं के उपचार की व्यवस्था करना।
 - (ii) पशुपालन की सुविधा उपलब्ध कराना।
 - (iii) अर्न्तवासी रोगी पशुपालकों को चिकित्सालय में ठहरने की व्यवस्था करना।
 - (iv) पशु चिकित्सा भवनों में सुधार करना।
 - (v) राज्य गौ संवर्धन बोर्ड की अनुमति से अनुदान प्राप्त गौशालाओं की देखभाल/पर्यवेक्षण करना।
 - (vi) पशु कूरता निवारण अधिनियम का पालन करना।
 - (vii) पशु पक्षियों के कल्याण के कार्यक्रमों के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना।
 - (viii) पालतू जानवरों का टीकाकरण तथा उपचार करना।
 - (ix) रेबीज नियंत्रण कार्यक्रम का प्रचार एवं सहयोग करना।
 - (x) पशु चिकित्सा एवं उन्नत प्रजनन से संबंधित अन्य कार्य।
- जिला पशु कल्याण समितियों में कलेक्टर कार्यकारी अध्यक्ष, उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवार्ये सदस्य व पदेन सचिव एवं जिला स्तर के पशु चिकित्सालय का प्रभारी पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञ सदस्य उप सचिव सहित 11 सदस्य होते हैं। इसके अतिरिक्त समिति में जिले के निर्वाचित दो विधायक भी सदस्य होते हैं।

7.5 पशु कूरता निवारण समिति:-

प्रदेश के 51 जिलों में पशु कूरता निवारण समिति का गठन किया गया है। जिले में पशु कूरता निवारण से संबंधित कार्य समिति के द्वारा किया जाता है।

7.6 मध्यप्रदेश पशु चिकित्सा परिषद्

प्रदेश में पशु चिकित्सा सेवाओं के नियमन हेतु भारतीय पशु चिकित्सा परिषद् अधिनियम 1984 के प्रावधानों के तहद् कार्यवाही किए जाने के लिए वर्ष 2000 में मध्यप्रदेश पशु चिकित्सा परिषद् का गठन किया गया है।

7.6.1 मध्यप्रदेश राज्य पशु चिकित्सा परिषद् में निम्नानुसार सदस्य होते हैं-

- (i) निर्वाचित सदस्य-4
- (ii) राज्य शासन द्वारा नामांकित सदस्य-3
- (iii) पशु चिकित्सा संस्थाओं के मुखिया-पदेन सदस्य-1
- (iv) संचालक पशुपालन-पदेन सदस्य-1
- (v) प्रदेश स्तर के पशु चिकित्सा संघ का प्रतिनिधि-1
- (vi) रजिस्ट्रार मध्यप्रदेश पशु चिकित्सा परिषद्-पदेन सदस्य-1

7.6.2 मध्यप्रदेश राज्य पशु चिकित्सा परिषद् में वर्तमान में 3450 पशु चिकित्सक

पंजीकृत हैं जिसमें से कुल 1727 पंजीयन मान्य एवं 1723 अमान्य है।

भाग-आठ

परिशिष्ट-एक

मध्यप्रदेश में 19वीं पंचवर्षीय पशु संगणना 2012 के जिलेवार पशुधन के आँकड़े :-

क्र०	जिला	गौवंशीय पशु			भैंसवंशीय पशु	भेड़ा-भेंड़ी	बकरा-बकरी	सूकर	घोड़े-घोड़ी	खच्चर	गधे	ऊँट	कुल पशुधन	कुल कुक्कुट
		संकर नस्ल	देशी नस्ल	योग										
1	अलीराजपुर	431	440049	440480	57493	1940	310263	146	26	0	381	0	810729	665104
2	अनुपपुर	7572	339929	347501	62058	185	64172	3010	1098	0	35	12	478071	98572
3	अशोकनगर	11382	230187	241569	120889	2658	86420	965	114	0	63	0	452678	22901
4	बालाघाट	10871	565912	576783	141034	3	225972	5386	748	399	9	9	950343	248804
5	बड़वानी	599	399640	400239	110663	2661	306715	796	55	0	715	0	821844	703619
6	बैतूल	22908	503145	526053	120395	1703	145214	1052	405	182	229	1	795234	183493
7	भिण्ड	7530	102030	109560	219145	5808	95660	5146	264	49	332	5	435969	9234
8	भोपाल	20658	89434	110092	83655	65	39155	945	66	0	181	0	234159	990653
9	बुरहानपुर	2125	129372	131497	36211	49251	77342	531	1755	0	506	0	297093	104865
10	छतरपुर	3095	340818	343913	239206	4553	254774	6761	257	358	138	0	849960	80794
11	छिंदवाड़ा	23080	675987	699067	136696	56	273070	1799	1032	29	239	0	1111988	361116
12	दमोह	4868	553977	558845	106723	3627	121823	5418	246	0	50	0	796732	45833
13	दतिया	630	106555	107185	150324	3858	99841	2082	127	109	357	0	363883	15046
14	देवास	30259	314631	344890	236555	668	165742	740	84	25	177	1	748882	147955
15	धार	58107	565306	623413	200419	2165	435624	530	2040	2050	386	3	1266630	643012
16	डिंडोरी	506	375053	375559	43204	73	65329	5212	916	1	353	87	490734	136170
17	खण्डवा	1510	344854	346364	121184	169	130576	1137	672	837	83	0	601022	76441
18	गुना	14824	352976	367800	222426	706	129993	3415	94	18	615	52	725119	46725
19	ग्वालियर	5723	182221	187944	226089	15211	164062	2407	107	45	466	164	596495	49930
20	हरदा	2469	139240	141709	72850	1416	45989	208	45	2	8	0	262227	27717
21	होशंगाबाद	20369	319633	340002	112526	61	80059	2396	254	5	284	2	535589	159154
22	इन्दौर	81455	96129	177584	155290	629	96272	4	715	776	81	0	431351	141223
23	जबलपुर	27922	337423	365345	95324	1170	104280	4832	118	1	20	0	571090	3401896

24	झाबुआ	17409	391764	409173	102807	3024	266435	0	39	1	253	0	781732	468308
25	कटनी	3497	431864	435361	51866	1522	92760	3409	59	18	10	5	585010	18252
26	मंडला	7603	386045	393648	54641	132	77995	3842	274	447	39	0	531018	122671
27	मंदसौर	51231	245841	297072	224443	10181	182244	4267	927	13	584	1280	721011	33308
28	मुरैना	12715	129199	141914	623861	14758	164010	8618	461	232	2295	237	956386	49539
29	नरसिंहपुर	38080	283033	321113	127230	744	106612	2825	256	20	555	1	559356	53835
30	नीमच	21422	226366	247788	138044	8930	145131	1258	425	0	176	590	542342	28843
31	पन्ना	1408	413407	414815	141895	4011	125289	6477	353	236	327	0	693403	53448
32	रायसेन	12936	417270	430206	118116	850	90778	1010	277	4	322	1	641564	101297
33	राजगढ़	13223	478634	491857	510774	857	188593	2719	188	18	643	19	1195668	53531
34	रतलाम	30443	292175	322618	172635	3245	200927	1384	792	502	194	8	702305	208028
35	रीवा	41391	872814	914205	170806	24120	198629	15103	145	73	81	0	1323162	65982
36	सागर	8073	794747	802820	213711	1327	140628	5837	450	39	45	5	1164862	102375
37	सतना	23956	829593	853549	196178	15178	252606	9412	288	128	122	0	1327461	60120
38	सीहोर	51522	205100	256622	133069	175	67971	686	54	9	91	2	458679	48077
39	सिवनी	21376	491310	512686	124943	45	172503	3709	145	3	20	0	814054	363750
40	शहडोल	6131	500752	506883	86900	5842	104921	5062	249	33	23	0	709913	158809
41	शाजापुर	29690	306744	336434	292145	321	199970	3299	244	2	499	438	833352	194857
42	श्योपुर	560	244573	245133	144961	7261	123704	3314	55	1	640	132	525201	29146
43	शिवपुरी	16691	527805	544496	370247	47405	304748	9080	178	7	412	3	1276576	136059
44	सीधी	14314	433067	447381	94039	8803	190999	12776	35	42	23	0	754098	280298
45	सिंगरौली	2850	542021	544871	80167	7306	231458	3119	3	0	0	0	866924	203665
46	टीकमगढ़	6407	360563	366970	232231	38850	223571	5995	385	13	180	0	868195	180077
47	उज्जैन	33558	238866	272424	309821	724	205774	2248	614	49	761	356	792771	143792
48	उमरिया	974	337852	338826	46335	2877	68981	1000	26	0	10	0	458055	63770
49	विदिशा	13026	351331	364357	152480	511	80598	2411	353	213	518	0	601441	28053
50	खरगौन	1598	524152	525750	203285	1318	287754	1475	290	0	385	9	1020266	294569
योग		840977	18761389	19602366	8187989	308953	8013936	175253	18803	6989	14916	3422	36332627	11904716

19वीं पशुधन गणना 2012 के अनुसार पशुधन आँकड़ों में देश की तुलना में म0प्र0 की हिस्सेदारी

क्र०	विवरण	भारत	मध्यप्रदेश	भारत की तुलना में म0प्र0 का प्रतिशत
1.	गौवंशीय			
(अ)	संकर नस्ल पशु	39731810	840977	2.11
(ब)	देशी नस्ल पशु	151172295	18761389	12.41
	कुल गौवंशीय पशु	190904105	19602366	10.27
2.	भैंस वंशीय पशु	108702122	8187989	7.53
3.	भेड़ा-भेड़ी	65069189	308953	0.47
4.	बकरा-बकरी	135173093	8013936	5.93
5.	सूकर	10293695	175253	1.70
6.	घोड़े-टट्टू	624732	18803	3.01
8.	खच्चर	196378	6989	3.56
9.	गधे	318787	14916	4.68
12.	ऊँट	400274	3422	0.85
	कुल पशुधन	512057301	36332627	7.10
11.	कुल कुक्कुट	729209320	11904716	1.63
12.	कुल कुत्ते	11672617	433367	3.71
13,	खरगोश	591685	3679	0.62

*स्रोत: भारत सरकार द्वारा अधिसूचित पुस्तिका अनुसार

देश के अन्य राज्यों की तुलना में प्रदेश के पशु उत्पादों अनुमानित दूध,अण्डा, ऊन एवं मांस (उत्पादन वर्ष 2015-16) की स्थिति

क्र०	प्रदेश	दूध उत्पादन (000मे.टन में)	अण्डा उत्पादन (लाख में)	मांस उत्पादन (000मे.टन में)	ऊन उत्पादन (000कि.ग्रामें)
1	आन्ध्र प्रदेश	10817	141743	566	789
2	तेलंगाना	4442	112058	542	4562
2	विहार	8288	10021	302	240
3	छत्तीसगढ़	1277	15028	41	90
4	गोवा	54	352	8	0
5	गुजरात	12262	17216	34	2283
6	हरियाणा	8381	49133	403	702
7	हिमांचल प्रदेश	1283	812	4	1409
8	जम्मू एवं कश्मीर	2273	2309	75	6866
9	झारखण्ड	1812	4833	51	166
10	कर्नाटक	6344	47660	197	8191
11	केरल	2650	24425	466	0
12	मध्यप्रदेश	12148	14414	70	442
13	महाराष्ट्र	10153	52858	675	1390
14	उड़ीसा	1930	19273	165	0
15	पंजाब	10774	44218	250	473
16	राजस्थान	18500	13853	180	13415
17	तमिलनाडु	7244	161252	544	1
18	उत्तर प्रदेश	26387	21929	1418	1265
19	उत्तराखण्ड	1656	3907	28	513
20	पश्चिम बंगाल	5038	60108	686	748
21	अरुणाचल प्रदेश	50	427	19	36
22	असम	843	4740	45	0
23	मणिपुर	79	1037	26	0
24	मेघालय	84	1064	41	0
25	मिजोरम	22	391	14	0
26	नागालैण्ड	77	465	36	0
27	सिक्किम	67	102	6	0
28	त्रिपुरा	152	2161	37	0
29	अण्डमान निकोवार	15	989	5	0
30	चण्डीगढ़	43	167	1	0
31	दादर व नगरहवेली	9	73	0	0
32	दमन एण्ड ड्यू	1	18	1	0
33	दिल्ली	281	0	70	0
34	लक्षद्वीप	3	144	1	0
35	पुडुचेरी	48	114	15	0
	योग	155491	829294	7020	43581

भारत सरकार कृषि मंत्रालय, सांख्यिकी अनुभाग

जिलेवार अनुमानित दूध,अण्डा, ऊन एवं मांस उत्पादन की जानकारी
(वर्ष 2015-16)

क्रं	जिले का नाम	दूध उत्पादन (000 मे.टन में)	अण्डा उत्पादन (लाख में)	मांस उत्पादन (000मे.टन में)	ऊन उत्पादन (000किग्रा में)
1	जबलपुर	326.12	4376.99	8.86	1.41
2	कटनी	148.46	33.33	1.39	0.00
3	मंडला	89.38	113.96	0.54	0.00
4	डिंडोरी	63.06	97.39	0.40	0.00
5	नरसिंहपुर	149.76	20.35	0.46	0.92
6	छिंदवाड़ा	201.45	456.47	1.45	0.00
7	बालाघाट	142.33	231.04	0.74	0.00
8	सिवनी	147.92	154.89	2.13	0.00
9	सागर	333.81	254.21	1.41	0.23
10	दमोह	203.47	67.93	0.69	6.77
11	पन्ना	194.57	31.03	0.54	6.10
12	टीकमगढ़	331.65	78.76	1.84	86.74
13	छतरपुर	318.21	54.10	0.67	9.01
14	रीवा	386.36	38.90	1.11	14.90
15	सीधी	151.83	124.81	0.94	2.99
16	सिंगरौली	179.64	147.76	0.71	0.00
17	सतना	350.06	60.82	0.90	33.86
18	शहडोल	114.41	106.94	0.54	7.20
19	अनुपपुर	61.20	53.49	0.50	0.05
20	उमरिया	73.14	40.96	0.38	0.00
21	इन्दौर	444.23	1306.90	5.85	0.30
22	धार	327.99	367.37	1.00	0.00
23	झाबुआ	114.48	353.67	0.42	6.76
24	अलीराजपुर	89.61	276.75	0.44	3.12
25	खरगौन	259.96	293.29	0.96	1.14

26	बड़वानी	156.27	417.81	0.77	0.00
27	खण्डवा	178.10	70.00	1.45	0.00
28	बुरहानपुर	53.05	48.01	0.66	20.30
29	उज्जैन	544.48	85.32	1.12	0.28
30	मंदसौर	345.34	43.63	0.63	22.38
31	नीमच	192.71	14.95	0.48	18.19
32	रतलाम	234.35	88.62	1.83	5.21
33	देवास	378.62	149.11	3.68	0.00
34	शाजापुर	361.89	428.87	1.70	0.00
35	ग्वालियर	361.50	87.58	0.77	31.60
36	मुरैना	587.47	25.21	0.57	28.03
37	श्योपुर	253.73	17.44	0.34	7.20
38	भिण्ड	361.81	14.17	0.45	10.08
39	शिवपुरी	445.56	74.29	0.87	108.89
40	गुना	254.57	47.52	0.59	0.40
41	अशोकनगर	141.12	19.71	0.39	2.99
42	दतिया	214.00	12.51	0.39	4.60
43	भोपाल	215.25	2728.38	8.40	0.04
44	सीहोर	350.73	90.84	1.67	0.00
45	रायसेन	209.60	101.03	1.78	0.56
46	विदिशा	274.26	37.93	2.39	0.00
47	बैतूल	223.93	199.30	0.76	0.00
48	राजगढ़	339.37	382.39	2.37	0.12
49	होशंगाबाद	191.26	47.23	0.53	0.00
50	हरदा	94.83	40.33	0.34	0.00
	योग	12148.37	14414.28	69.83	442.39

प्रजनन योग्य गौ-भैंस की जानकारी

19वीं पशु संगणना 2012 के अनुसार प्रजनन योग्य मादाओं की जानकारी						
क्रं	जिला	संकर गाय	देशी गाय	योग	भैंस वंश	कुल प्रजनन योग्य गौ-भैंस वंश
1	अलीराजपुर	124	64409	64533	29532	94065
2	अनुपपुर	3011	79849	82860	16870	99730
3	अशोकनगर	4830	114498	119328	64124	183452
4	बालाघाट	3588	145701	149289	49073	198362
5	बड़वानी	296	112620	112916	60139	173055
6	बैतूल	10661	123578	134239	61944	196183
7	भिण्ड	4147	48105	52252	108154	160406
8	भोपाल	10880	44632	55512	48275	103787
9	बुरहानपुर	1169	36461	37630	20626	58256
10	छतरपुर	1194	121927	123121	120322	243443
11	छिंदवाड़ा	9761	186116	195877	67810	263687
12	दमोह	1815	224838	226653	54368	281021
13	दतिया	300	43524	43824	80226	124050
14	देवास	16171	110599	126770	131507	258277
15	धार	28952	187548	216500	110689	327189
16	डिण्डोरी	165	81736	81901	15741	97642
17	खण्डवा	536	99803	100339	66621	166960
18	गुना	5940	142573	148513	106704	255217
19	ग्वालियर	3050	104358	107408	129124	236532
20	हरदा	1188	48157	49345	38823	88168
21	होशंगाबाद	9127	133146	142273	57166	199439
22	इन्दौर	44411	43558	87969	93664	181633
23	जबलपुर	13625	130049	143674	54513	198187
24	झाबुआ	7271	101771	109042	52153	161195
25	कटनी	1041	135123	136164	23248	159412

26	मंडला	2522	95499	98021	16436	114457
27	मंदसौर	26836	106393	133229	120153	253382
28	मुरैना	6779	60591	67370	320390	387760
29	नरसिंहपुर	17704	109875	127579	65753	193332
30	नीमच	11451	97574	109025	71338	180363
31	पन्ना	356	152010	152366	72306	224672
32	रायसेन	6715	181122	187837	63384	251221
33	राजगढ़	6316	164591	170907	232480	403387
34	रतलाम	16128	107582	123710	92360	216070
35	रीवा	19315	312914	332229	82524	414753
36	सागर	3756	360566	364322	111268	475590
37	सतना	9846	328558	338404	94767	433171
38	सीहोर	28203	77548	105751	70884	176635
39	सिवनी	9238	128513	137751	59923	197674
40	शहडोल	2881	122041	124922	28735	153657
41	शाजापुर	15172	121356	136528	154906	291434
42	श्योपुर	259	111441	111700	72965	184665
43	शिवपुरी	7852	189301	197153	189757	386910
44	सीधी	6138	125337	131475	42582	174057
45	सिंगरौली	1242	145569	146811	38012	184823
46	टीकमगढ़	2356	125659	128015	118584	246599
47	उज्जैन	17204	101982	119186	166980	286166
48	उमरिया	403	88431	88834	19731	108565
49	विदिशा	6708	176220	182928	83848	266776
50	खरगौन	809	152558	153367	121632	274999
	योग	409442	6407910	6817352	4173114	10990466

मध्यप्रदेश में 19वीं पशु संगणना 2012के अनुसार प्रति संस्थावार पशुधन
की स्थिति
(दिसम्बर 2016 की स्थिति में)

क्रं	जिला	पशु चिकित्सालय	पशु औषधालय	कुल संस्थाएं	पशु संख्या 2012	प्रति संस्था पशु संख्या
1	भोपाल	15	7	22	234159	10644
2	सीहोर	19	25	44	458679	10425
3	रायसेन	16	33	49	641564	13093
4	राजगढ़	20	40	60	1195668	19928
5	विदिशा	14	39	53	601441	11348
6	बैतूल	27	54	81	795234	9818
7	होशंगाबाद	16	33	49	535589	10930
8	हरदा	8	13	21	262227	12487
9	इन्दौर	18	24	42	431351	10270
10	धार	30	52	82	1266630	15447
11	झाबुआ	14	25	39	781732	20044
12	अलीराजपुर	13	19	32	810729	25335
13	खरगौन	38	34	72	1020266	14170
14	बड़वानी	25	23	48	821844	17122
15	खण्डवा	21	21	42	601022	14310
16	बुरहानपुर	8	15	23	297093	12917
17	उज्जैन	26	21	47	792771	16867
18	देवास	20	25	45	748882	16642
19	शाजापुर	17	17	34	833352	24510
20	रतलाम	21	38	59	702305	11903
21	मंदसौर	24	17	41	721011	17586
22	नीमच	17	16	33	542342	16435
23	ग्वालियर	22	20	42	596495	14202
24	शिवपुरी	29	47	76	1276576	16797
25	दतिया	12	25	37	363883	9835
26	मुरैना	24	23	47	956386	20349
27	श्योपुरकला	11	22	33	525201	15915
28	भिण्ड	21	28	49	435969	8897
29	गुना	15	41	56	725119	12949
30	अशोकनगर	11	24	35	452678	12934

कं	जिला	पशु चिकित्सालय	पशु औषधालय	कुल संस्थाएं	पशु संख्या 2012	प्रति संस्था पशु संख्या
31	सागर	41	42	83	1164862	14034
32	दमोह	29	23	52	796732	15322
33	छतरपुर	34	39	73	849960	11643
34	टीकमगढ़	26	42	67	868195	12958
35	पन्ना	26	32	58	693403	11955
36	जबलपुर	31	28	59	571090	9679
37	कटनी	13	29	41	585010	14269
38	नरसिंहपुर	14	33	47	559356	11901
39	सिवनी	18	53	70	814054	11629
40	छिंदवाड़ा	26	74	100	1111988	11120
41	बालाघाट	27	48	75	950343	12671
42	मण्डला	25	31	56	531018	9482
43	डिण्डोरी	12	24	35	490734	14021
44	रीवा	41	57	98	1323162	13502
45	सतना	28	61	89	1327461	15915
46	सीधी	24	41	65	754098	11602
47	सिंगरौली	15	21	36	866924	24081
48	शहडोल	23	35	58	709913	12240
49	उमरिया	13	16	29	458055	15795
50	अनुपपुर	15	26	41	478071	11660
51	आगर	10	9	19		
	योग	1063	1585	2648	36332627	13721





राज्य स्तरीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान भोपाल में दिनांक 9 जनवरी 2017 को माननीय श्री अंतर सिंह आर्य जी मंत्री, मध्य प्रदेश शासन, पशुपालन विभाग, विभागीय समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए



राज्य स्तरीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान भोपाल में दिनांक 9 जनवरी 2017 को विभागीय समीक्षा बैठक में उपस्थित प्रदेश के अधिकारी गण



माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान जी मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश शासन, घुमक्कड़, अर्द्ध घुमक्कड़ विमुक्त जाति सम्मेलन देवास में दिनांक 23 दिसम्बर 2016 को योजनाओं का अवलोकन करते हुए



ग्राम सनावद (जिला खरगौन) में दिनांक 31 अक्टूबर 2016 को गोकुल महोत्सव के शुभारंभ अवसर पर गौपूजन करते हुए माननीय श्री अंतर सिंह आर्य जी मंत्री, मध्य प्रदेश शासन, पशुपालन विभाग